(९४) वे तुमसे बहाने बनायेंगे जब तुम उनके पास जाओगे, (हे नबी) कह दो कि बहाने न बनाओ, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे अल्लाह ने हमें तुम्हारे (करतूतों) से सूचित कर दिया है, तथा अल्लाह एवं उसके रसूल (संदेशवाहक) तुम्हारे कर्म देख लेंगे फिर तुम परोक्ष एवं प्रत्यक्ष के जानकार के पास लौटाये जाओगे फिर वह तुम्हें सूचित कर देगा जो तुम कर रहे थे।

يَعۡتَذِرُونَ إِلَيۡكُمۡ إِذَا رَجَعۡتُمۡ إِلَيۡهِمۡۚ قُل لَّا تَعۡتَذِرُواْ لَن نُّؤۡمِنَ لَكُمۡ قَدۡ نَبَّأَنَا ٱللَّهُ مِنۡ أَخۡبَارِكُمۡۚ وَسَيَرَى ٱللَّهُ عَمَلَكُمۡ وَرَسُولُهُۥ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَٰلِمِ ٱلۡغَيۡبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمۡ تَعۡمَلُونَ ۝٩٤

(९५) हाँ वह तुम्हारे समक्ष अल्लाह की शपथ ले लेंगे जब तुम उनके पास वापस जाओगे ताकि तुम उनको उनकी दशा पर छोड़ दो, अत: तुम उन्हें उनकी स्थिति पर छोड़ दो, वस्तुत: वह अत्यन्त अपवित्र हैं तथा उनका स्थान नरक है उनके करतूतों के बदले जो किया करते थे।

سَيَحۡلِفُونَ بِٱللَّهِ لَكُمۡ إِذَا ٱنقَلَبۡتُمۡ إِلَيۡهِمۡ لِتُعۡرِضُواْ عَنۡهُمۡۖ فَأَعۡرِضُواْ عَنۡهُمۡۖ إِنَّهُمۡ رِجۡسٞۖ وَمَأۡوَىٰهُمۡ جَهَنَّمُ جَزَآءَۢ بِمَا كَانُواْ يَكۡسِبُونَ ۝٩٥

(९६) यह तुम्हारे निकट इसलिये शपथ लेंगे कि तुम उनसे प्रसन्न हो जाओ तो यदि तुम उनसे प्रसन्न हो भी जाओ तो अल्लाह ऐसे दुराचारियों से प्रसन्न नहीं होता।[1]

يَحۡلِفُونَ لَكُمۡ لِتَرۡضَوۡاْ عَنۡهُمۡۖ فَإِن تَرۡضَوۡاْ عَنۡهُمۡ فَإِنَّ ٱللَّهَ لَا يَرۡضَىٰ عَنِ ٱلۡقَوۡمِ ٱلۡفَٰسِقِينَ ۝٩٦

---

[1]इन तीन आयतों में उन द्वयवादियों (मुनाफ़िकों) का वर्णन है जो तबूक के युद्ध के समय मुसलमानों के साथ नहीं गये थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों के सुरक्षित वापस आने पर अपने बहाने प्रस्तुत करके उनकी दृष्टि में वफ़ादार बनना चाहते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया जब तुम उनके पास आओगे तो यह बहाने बनायेंगे। उनसे कह दो कि मेरे समक्ष कारण बताने की आवश्यकता नहीं है, इसलिए कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी वास्तविक स्थिति से हमें सूचित कर दिया है। अब तुम्हारे झूठे बहानों पर हम विश्वास किस प्रकार कर सकते हैं ? परन्तु उन बहानों की वास्तविकता निकट भविष्य में खुल जायेगी, तुम्हारे कर्म से जिसे अल्लाह तआला देख रहा है तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी दृष्टि उस पर है तुम्हारे कारणों

اَلۡاَعۡرَابُ اَشَدُّ كُفۡرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجۡدَرُ اَلَّا يَعۡلَمُوۡا حُدُوۡدَ مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوۡلِهٖ‌ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿۹۷﴾

(९७) असभ्य ग्रामीण लोग कुफ़्र तथा उन्माद में बहुत ही कठोर हैं,[1] तथा उनको ऐसा होना ही चाहिए कि उनको इन आदेशों का ज्ञान न हो, जो अल्लाह ने अपने रसूल पर

का स्वंय पर्दा उठ जायेगा। तथा यदि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों को फिर भी धोखा तथा छल देने में सफल हो गये तो अन्त में वह एक समय तो आयेगा ही, जब तुम ऐसी शक्ति के दरबार में उपस्थित किये जाओगे जो छिपी और स्पष्ट सभी बातों को जानने वाला है। उसे तो तुम कदापि धोखा नहीं दे सकते वह अल्लाह तआला तुम्हारे सभी कच्चे-चिट्ठे को तुम्हारे सामने खोलकर रख देगा। दूसरी आयत में फ़रमाया कि तुम्हारे लौटने पर सौगन्ध खायेंगे ताकि तुम उन्हें क्षमा कर दो। परन्तु तुम उन को उनके हाल पर छोड़ दो। ये लोग अपने विश्वास तथा कर्म के अनुसार अशुद्ध हैं, उन्होंने जो कुछ किया है इसका बदला नरक ही है। तीसरी आयत में फ़रमाया कि ये तुम्हें प्रसन्न करने के लिये सौगन्ध खायेंगे। परन्तु इन मूर्खों को यह नहीं ज्ञात है कि यदि तुम इन से प्रसन्न भी हो जाओ, तो उन्होंने जिस फिस्क अर्थात अल्लाह की आज्ञा पालन से मुँह मोड़कर भागने का मार्ग अपनाया है, उसके कारण अल्लाह तआला उनसे किस प्रकार प्रसन्न हो सकता है ?

[1]उपरोक्त आयतों में उन द्वयवादियों का वर्णन था जो मदीना नगर के निवासी थे तथा कुछ पाखण्डी वे भी थे, जो मदीना नगर के निकटवर्ती गाँवों के निवासी थे। उसे अरबी भाषा में أعراب कहा जाता है जो أعرابي का बहुबचन है। नगरवासियों के व्यवहार एवं चरित्र की अपेक्षा जिस प्रकार उनमें अभद्रता तथा कठोरता पायी जाती थी उसी प्रकार उनमें जो काफिर तथा पाखण्डी थे वह कुफ़्र तथा पाखण्ड में नगरवासियों से अधिक कठोर तथा धार्मिक आदेशों से अधिक अनभिज्ञ थे। इस आयत में उन्हीं का वर्णन तथा उनके इसी व्यवहार का स्पष्टीकरण है। कुछ हदीसों से भी उनके व्यवहार पर प्रकाश पड़ता है। जैसे एक समय कुछ अरब ग्रामीण लोग रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा उन्होंनें पूछा (أَتُقَبِّلُونَ صِبْيَانَكُمْ) "क्या तुम अपने बच्चों का चुम्बन करते हो ?" सहाबा ने कहा "हाँ" उन्होंने कहा, "अल्लाह की सौगन्ध हम तो चुम्बन नहीं करते" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुनकर फ़रमाया "यदि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों से प्रेम तथा दया की भावना निकाल दिया है, तो उसमें मेरा क्या अधिकार ?" (सहीह बुख़ारी किताबुल अदब बाब रहमतुल वलदे व तकबीलुहु व मुआनकतहू, सहीह मुस्लिम किताबुल फ़ज़ायल बाब रहमतुहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अस्सिबयान वल अयाल)।

उतारे हैं[1] तथा अल्लाह अत्यधिक ज्ञान वाला अत्यधिक विवेक वाला है।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَائِرَ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾

(९८) तथा उन ग्रामीणों में से कुछ ऐसे हैं[2] कि जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको दण्ड समझते हैं।[3] तथा तुम (मुसलमानों) के लिये बुरे दिन की प्रतीक्षा में रहते हैं।[4] बुरा समय उन पर ही पड़नें वाला है,[5] तथा अल्लाह सुननेवाला तथा जाननेवाला है।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبَاتٍ عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ

(९९) तथा कुछ ग्रामीणों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर तथा क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हैं तथा जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको अल्लाह की निकटता तथा रसूल का आशीर्वाद प्राप्त करने का साधन बनाते हैं।[6] याद रखो

---

[1]इसका कारण यह है कि चूँकि वे नगर से दूर रहते हैं तथा अल्लाह तथा रसूल की बातें सुनने का अवसर उनको नहीं मिलता।

[2]अब इन ग्रामीणों के दो प्रकार बताये जा रहे हैं। यह प्रथम प्रकार है।

[3] غُرْمٌ आर्थिक दण्ड को कहते हैं अर्थात ऐसा व्यय जो अप्रसन्नता के साथ बाध्य होकर किया जाये।

[4] دائـرة का बहुबचन دَوائِرٌ है। साँसारिक घटनाचक्र अर्थात कठिनाईयाँ तथा कष्ट। अर्थात वे प्रतीक्षा में रहते हैं कि मुसलमान साँसारिक घटनाचक्र की कठिनाइयों तथा दुखों के शिकार हों।

[5]यह श्राप अर्थात विधेय है कि साँसारिक घटनाचक्र की कठिनाइयाँ तथा दुख उन्हीं पर पड़े क्योंकि वही इस के योग्य हैं।

[6]ये अरब ग्रामीणों का दूसरा प्रकार है जिनको अल्लाह ने शहरी क्षेत्र से दूर रहने के उपरान्त, अल्लाह तथा आख़िरत के दिन पर ईमान लाने का सौभाग्य प्रदान किया। तथा इस ईमान के कारण उनसे वह गँवारपन भी दूर कर दिया जो ग्रामीण जीवन के कारण ग्रामीणों में सामान्य रूप से पाया जाता है। अतः वह अल्लाह के मार्ग में खर्च हुए माल को दण्ड समझने के बजाय अल्लाह की निकटता तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

كِ उनका यह ख़र्च करना निस्सन्देह उनके लिए निकटता का साधन है, उनको अल्लाह अवश्य अपनी कृपा में प्रवेश देगा ।[1] अल्लाह तआला अति क्षमाशील कृपानिधि है ।

اللهُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٩﴾

(१००) तथा जो मोहाजिर (मक्का से मदीना आये हुए लोग) तथा अंसार (मदीना के मूल निवासी) आदिम तथा प्रथम हैं तथा जितनें लोग नि:स्वार्थ रूप से उन के अनुयायी हैं, [2]

وَالسَّٰبِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَٰجِرِينَ وَالْأَنصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُم بِإِحْسَٰنٍ رَّضِيَ اللهُ

वसल्लम का आशीर्वाद लेने का साधन समझते हैं । यह संकेत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस व्यवहार की ओर जो दान देने वालों के लिये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का था । अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पक्ष में पुण्य प्रदान के लिये अल्लाह से प्रार्थना करते । जिस प्रकार हदीस में आता है कि एक दान लाने वाले के लिये आपने प्रार्थना की । «اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ آلِ أَبِي أَوْفَىٰ» (सहीह बुख़ारी संख्या ४१६६, सहीह मुस्लिम संख्या ७५६) "ऐ अल्लाह ! अबी औफ़ा की संतान पर दया कर ।"

[1]यह शुभ सूचना है कि अल्लाह की निकटता उन्हें प्राप्त है तथा अल्लाह की कृपा के वे पात्र हैं ।

[2]इसमें तीन गुटों का वर्णन है । एक मोहाजिरों का, जिन्होंने धर्म के लिये अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर मक्का तथा अन्य क्षेत्रों से स्थानान्तरण किया तथा सब कुछ छोड़-छाड़ कर मदीना आ गये । दूसरे अंसार जो मदीना के निवासी थे । उन्होंने प्रत्येक अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता तथा सुरक्षा की तथा मदीने आने वाले मोहाजिरों की भी अत्यधिक सहायता तथा सम्मान किया । तथा अपना सब कुछ उनकी सेवा में प्रस्तुत कर दिया । यहाँ दोनों गुटों के पहल करने वालों का वर्णन है, अर्थात दोनों गुटों में जो इस्लाम धर्म स्वीकार करने में सबसे प्रथम रहे । इसकी परिभाषा में मतभेद है । कुछ के निकट प्रथम पहल करने वाले वे हैं जिन्होंने दोनों क़िबलों की ओर मुख करके नमाज़ पढ़ी अर्थात क़िबला परिवर्तन के पूर्व मुसलमान होने वाले मोहाजिर तथा अंसार । कुछ के निकट वे सहाबी हैं जो हुदैबिया में बैअते रिज़वान में उपस्थित थे । कुछ के निकट बद्र के युद्ध वाले हैं । इमाम शौकानी फ़रमाते हैं ये सारे ही हो सकते हैं । तीसरा गुट वह है जो इन मोहाजिरों तथा अंसार के सदव्यवहार तथा उपकार के साथ अनुयायी हैं । इस गुट से तात्पर्य कुछ के निकट परिभाषित ताबईन हैं जिन्होने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

عَنۡهُمۡ وَرَضُوا۟ عَنۡهُ وَأَعَدَّ لَهُمۡ جَنَّٰتٍ تَجۡرِي تَحۡتَهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدٗاۚ ذَٰلِكَ ٱلۡفَوۡزُ ٱلۡعَظِيمُ ١٠٠

अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हुआ तथा वे सब अल्लाह से प्रसन्न हुए तथा अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ का प्रबन्ध कर रखा है जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे सदैव रहेंगे,[1] यह बड़ी सफलता है।

وَمِمَّنۡ حَوۡلَكُم مِّنَ ٱلۡأَعۡرَابِ مُنَٰفِقُونَۖ وَمِنۡ أَهۡلِ ٱلۡمَدِينَةِ مَرَدُوا۟ عَلَى ٱلنِّفَاقِ لَا تَعۡلَمُهُمۡۖ

(१०१) तथा कुछ तुम्हारे आसपास के ग्रामीणों में से एवं मदीना के निवासियों में ऐसे अवसरवादी हैं जो द्वयवाद पर अड़े हुए हैं,[2]

वसल्लम को नहीं देखा परन्तु उन्हें सहाबा की निकटता एवं साथ्यता का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा कुछ के निकट इससे तात्पर्य सामान्य मुसलमान हैं अर्थात क़ियामत तक जितने भी अंसार तथा मोहाजिर से प्रेम रखने वाले तथा उनके पदचिन्हों पर चलने वाले मुसलमान हैं, वे उसमें सम्मिलित हैं। इसमें परिभाषित ताबईन भी सम्मिलित हो जाते हैं।

[1]अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न हो गया का अर्थ है अल्लाह तआला ने उनके पुण्य स्वीकार कर लिये, उनके मनुष्य होने के कारण जो त्रुटियाँ हुई क्षमा कर दिया तथा वह उनपर क्रोधित नहीं। क्योंकि यदि ऐसा न होता तो उनके लिये स्वर्ग के सुखों की शुभ सूचना क्यों दी जाती ? जो इसी आयत में दी गयी है। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि अल्लाह की प्रसन्नता सामयिक अथवा अस्थाई नहीं, अपितु स्थाई है। यदि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात सहाबा कराम को धर्मभ्रष्ट हो जाना था। (जैसा कि एक झूठे गुट का विश्वाश है) तो अल्लाह तआला उन्हें स्वर्ग के सुखों की शुभ सूचना से सम्मानित न करता। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि जब अल्लाह ने उनकी सारी त्रुटियाँ क्षमा कर दीं तो अब आलोचना तथा टिप्पणी के रूप में उनकी कमियों का वर्णन करना किसी मुसलमान को शोभा नहीं देता। इसके अतिरिक्त यह भी ज्ञात हुआ कि उनका प्रेम तथा अनुकरण अल्लाह की प्रसन्नता का साधन है तथा उनसे द्वेष तथा वैर एवं ईर्ष्या रखना अल्लाह की प्रसन्नता से वंचित होने का कारण है।

[2] مَرَدَ तथा تَمَرَّدَ का अर्थ है कोमलता, चिकनाहट तथा नंगा। अत: उस शाखा को जिसमें पत्ता न हो। जिस घोड़े के बाल न हों, जिस लड़के के मुख पर बाल न हों, इन सबको أمرد कहा जाता है तथा शीशे को صَرْحٌ مُمَرَّدٌ أي مجرد कहा जाता है। مردوا على النفاق का अर्थ होगा تجردوا على النفاق जैसाकि उन्होंने द्वयवाद के लिये अपने आपको शुद्ध रूप से अर्पित कर दिया है अर्थात इस पर उनका प्रबल तथा निरन्तर कार्य करना है।

نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۚ سَنُعَذِّبُهُم مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾

आप उनको नहीं जानते।[1] उनको हम जानते हैं हम उन को दोहरा दण्ड देंगे।[2] फिर वे बहुत बड़ी यातना की ओर भेजे जायेंगे।

وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠٢﴾

(१०२) तथा कुछ अन्य लोग हैं जो अपनी त्रुटियों को स्वीकार करते हैं,[3] जिन्होंने मिश्रित कर्म किये थे। कुछ अच्छे तथा कुछ बुरे।[4] अल्लाह से आशा है कि उन की क्षमा स्वीकार करे।[5] नि:संदेह अल्लाह अत्यधिक क्षमाशील एवं अत्यधिक कृपालु है।

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِم بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۖ

(१०३) आप उनके मालों में से दान ले लीजिये, जिसके द्वारा आप उनको शुद्ध एवं पवित्र कर दें तथा उनके लिए प्रार्थना कीजिए।[6] नि:सन्देह

[1]कितने स्पष्ट शब्दों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परोक्षज्ञ होने का खण्डन है। काश अहले बिदअत (धर्म में अधुनीकीकरण करने वाले) को क़ुरआन समझने का सौभाग्य प्राप्त हो।

[2]इससे तात्पर्य कुछ के निकट दुनिया का अपमान तथा निरादर तथा फिर आख़िरत की यातना है तथा कुछ के निकट दुनिया में ही दोहरा दण्ड है।

[3]ये वे नि:स्वार्थी मुसलमान हैं जो बिना कारण के मात्र आलस्य के कारण तबूक में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नहीं गये तथा बाद में उन्हें अपनी त्रुटि का आभास हो गया तथा पाप को स्वीकार कर लिया।

[4]भले से तात्पर्य वह पुण्य कार्य हैं जो धर्मयुद्ध में पीछे रह जाने के पूर्व वे करते रहे हैं, जिनमें विभिन्न धर्मयुद्ध में सम्मिलित होना भी है तथा कुछ "बुरे" से तात्पर्य यही तबूक के अवसर पर उनका पीछे रहना है।

[5]अल्लाह तआला की ओर से आशा विश्वास का लाभ प्रदान करती है अर्थात अल्लाह तआला ने उनकी ओर आकर्षित होकर उनके पाप स्वीकार करने को तौबा के समतुल्य मानकर उन्हें क्षमा कर दिया।

[6]यह सामान्य आदेश है। दान से तात्पर्य अनिवार्य दान अर्थात ज़कात भी हो सकती है तथा ऐच्छिक दान भी है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित किया जा रहा

إِنَّ صَلَوٰتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٣﴾

आपकी प्रार्थना उनके लिए शान्ति संतोष का साधन है तथा अल्लाह (तआला) भली प्रकार सुनता है, भली-भाँति जानता है।

أَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ ٱلتَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِۦ وَيَأْخُذُ ٱلصَّدَقَٰتِ وَأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾

(१०४) क्या उनको यह ज्ञान नहीं कि अल्लाह ही अपने भक्तों की क्षमा (तौबा) स्वीकार करता है तथा वही दान को अंगीकार करता है ।[1] तथा यह कि अल्लाह ही तौबा स्वीकार करनें में तथा कृपा करने में परिपूर्ण है।

وَقُلِ ٱعْمَلُوا۟ فَسَيَرَى ٱللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُۥ وَٱلْمُؤْمِنُونَۖ وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عَٰلِمِ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ

(१०५) तथा कह दीजिए कि तुम कर्म किये जाओ तुम्हारे कर्म अल्लाह स्वयं देख लेगा तथा उसका रसूल तथा ईमानवाले (भी देख लेंगे) तथा अवश्य तुमको ऐसे के पास जाना

कि उसके द्वारा आप मुसलमानों की शुद्धि तथा उनके मन को पवित्र करें। जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ज़कात तथा सामान्य दान मनुष्य के मन तथा धन की स्वच्छता तथा पवित्रता का साधन है। इसके अतिरिक्त अरबी भाषा में दान को "सदक़ा" इसलिए कहा जाता है कि यह देने वाले के ईमान की सदाक़त अर्थात सादिक़ (सच्चा) होने पर प्रमाण है। दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि सदक़ा लेने वाले को दान देने वाले के पक्ष में शुभ की प्रार्थना करनी चाहिए। जिस प्रकार यहाँ पर अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रार्थना करने का आदेश दिया है। तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके अनुसार प्रार्थना करते थे। इस आदेश के अनुसार सामान्य रूप से यह निष्कर्ष भी निकाला गया है कि ज़कात वसूल करने का अधिकार उस समय के इमाम को है। यदि कोई इससे इंकार करे तो आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक़ तथा सहाबा कराम के कर्मों के अनुसार एवं प्रकाश में उसके विरूद्ध धर्मयुद्ध आवश्यक है। (इब्ने कसीर)

[1]दान स्वीकार करता है का अर्थ (यदि वह उचित कमायी से हो) यह है कि उसे बढ़ाता है। जिस प्रकार हदीस में आया है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "अल्लाह तआला तुम्हारे दान की इस प्रकार पालन-पोषण करता है जिस प्रकार तुम में से कोई व्यक्ति अपने घोड़े के बच्चे का पालन-पोषण करता है, यहाँ तक कि एक खजूर के समान दान (बढ़-बढ़कर) ओहुद पर्वत के समान हो जाता है।" (सहीह बुख़ारी किताबुज़ ज़कात, तथा मुस्लिम किताबुज़ ज़कात)

لَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾

लेंगे) तथा अवश्य तुमको ऐसे के पास जाना है जो सभी छिपी तथा खुली बातों का जानने वाला है। अत: वह तुमको तुम्हारे सब किये हुए को बतला देगा।[1]

وَآخَرُونَ مُرْجَوْنَ لِأَمْرِ اللَّهِ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠٦﴾

(१०६) तथा कुछ अन्य लोग हैं जिनका मामला अल्लाह के आदेश आने तक स्थगित है।[2] या तो उन को दण्ड देगा[3] अथवा उन की तौबा (पश्चाताप) स्वीकार कर लेगा।[4] तथा अल्लाह अत्यधिक जानने वाला है अत्यधिक विवेकी है।

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَيَحْلِفُنَّ

(१०७) तथा कुछ ऐसे हैं जिन्होंने इन उद्देश्यों से मस्जिद बनायी है कि हानि पहुँचायें तथा कुफ़्र अर्धम की बातें करें तथा ईमानवालों में फूट डालें तथा उस व्यक्ति के ठहरने का प्रबन्ध करें जो इसके पूर्व से अल्लाह तथा

---

[1]देखने से तात्पर्य देखना एवं ज्ञान है। अर्थात तुम्हारे करतूतों को अल्लाह तआला ही नहीं देखता, अपितु उनका ज्ञान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों को भी (वह्यी के द्वारा) हो जाता है। (यह पाखण्डियों ही के विषय में कहा जा रहा है) इस विषय पर आयत पूर्व में भी गुज़र चुकी है। यहाँ ईमान वालों को भी सम्मिलित कर लिया गया है, जिनको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वताने से ज्ञान हो जाता है।

[2]तबूक के युद्ध में पीछे रह जाने वालों में एक तो पाखण्डी लोग थे, दूसरे वे जो अकारण ही पीछे रह गये थे। तथा उन्होंने अपनी त्रुटि को स्वीकार कर लिया था, परन्तु उन्हें क्षमा नहीं किया गया था। इस आयत में उन्हीं का वर्णन है जिनका मामला स्थगित कर दिया था। यह तीन व्यक्ति थे जिनकी चर्चा आगे आयेगी।

[3]यदि वह अपनी त्रुटि पर अडिग रहे।

[4]यदि वह शुद्ध तौबा कर लेंगे।

إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٠٧﴾

उसके रसूल का विरोधी है[1] तथा सौगन्ध खा जायेंगे कि मात्र भलाई के अतिरिक्त हमारा कोई उद्देश्य नहीं, अल्लाह गवाह है कि वे पूर्णरूप से झूठे हैं ।[2]

لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا ۚ لَّمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَن

(१०८) आप उसमें कभी खड़े न हों,[3] परन्तु जिस मस्जिद की आधारशिला प्रथम दिन से ही संयम पर रखी गयी हो, वह इस योग्य है

---

[1]इसमें पाखण्डियों के अत्यन्त कुरुप व्यवहार का वर्णन है कि उन्होंने एक मस्जिद बनवायी तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह बताया कि वर्षा, शीत तथा इस प्रकार के अवसरों पर रोगियों तथा कमज़ोरों को दूर जाने में कष्ट होता है । उनकी सुविधा के लिये हमने मस्जिद बनायी है । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहाँ चलकर नमाज़ पढ़े ताकि शुभ प्राप्त हो । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस समय तबूक के लिए पूर्णरूप से तैयार थे । आप ने वापसी में नमाज़ पढ़ने का वायदा किया । परन्तु वापसी में वह्यी (प्रकाशना) द्वारा अल्लाह तआला ने पाखण्डियों के वास्तविक उद्देश्य को खोल दिया कि इससे वह मुसलमानों को हानि पहुँचाकर कुफ़्र का प्रचार-प्रसार करना, मुसलमानों के मध्य मतभेद उत्पन्न करना तथा अल्लाह एवं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शत्रुओं के लिए निवास स्थान उपलब्ध कराना चाहते हैं ।

[2]अर्थात झूठी सौगन्ध खाकर वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को धोखा देना चाहते थे परन्तु अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके छल-कपट से बचा लिया तथा फ़रमाया कि उनके विचार शुद्ध नहीं हैं तथा जो कुछ प्रकट कर रहे हैं उसमें झूठे हैं ।

[3]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहाँ जाकर जो नमाज़ पढ़ने का वायदा किया है उसके अनुसार वहाँ जाकर नमाज़ न पढ़ें । अत: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने न केवल यह कि न वहाँ नमाज़ पढ़ी, बल्कि अपने कुछ साथियों को भेजकर मस्जिद गिरा दी तथा उसे नष्ट कर डाला । इससे धर्मगुरूओं नें निष्कर्ष निकाला है कि जो मस्जिद अल्लाह की इबादत के बजाय मुसलमानों के मध्य मतभेद उत्पन्न करने के लिए बनायी जाये वह मस्जिद दरार है, उसको गिरा दिया जाये ताकि मुसलमानों में भेद तथा बिखराव न उत्पन्न हो ।

تَقُوْمَ فِيْهِ ۭ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ
يَّتَطَهَّرُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ۝١٠٨

कि आप उसमें खड़े हों।[1] इसमें ऐसे मनुष्य हैं कि वे अत्यधिक पवित्र होने को प्रिय समझते हैं।[2] तथा अल्लाह तआला अत्यधिक पवित्र रहने वालों को प्रिय रखता है।

اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰي تَقْوٰى
مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ
اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰي شَفَا جُرُفٍ
هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ۭ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠٩

(१०९) फिर क्या ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ है जिसने अपने भवन की आधारशिला अल्लाह से डरने पर तथा अल्लाह की प्रसन्नता पर रखी हो अथवा वह व्यक्ति कि जिसने अपने भवन की आधारशिला घाटी के किनारे पर जोकि गिरने ही को हो रखी हो, फिर वह उसे लेकर नरक की आग में गिर पड़े ?[3] तथा अल्लाह तआला ऐसे अत्याचारियों को समझ ही नहीं देता।

---

[1]इससे तात्पर्य कौन-सी मस्जिद है ? इसमें मतभेद है। कुछ ने मस्जिदे "कुबा" तथा कुछ ने मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहा है। सलफ़ का एक गुट दोनों के पक्ष में रहा है। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि आयत से यदि मस्जिदे कुबा तात्पर्य है तो कुछ हदीसों में मस्जिद नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ﴿أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ﴾ का कृतार्थ सिद्ध किया गया है। तथा इन दोनों में कोई मतभेद नहीं। इसलिये कि यदि मस्जिदे कुबा के अन्दर यह गुण है कि प्रथम दिन से ही इसकी आधार शिला तक़्वा पर रखी गयी है, तो मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो प्रथम प्रकरण से ही इस गुण से विभूषित है तथा उसके अनुरूप है।

[2]हदीस में आता है कि इससे तात्पर्य कुबा के निवासी हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी पवित्रता की प्रशंसा की है, तुम क्या करते हो ? उन्होंने कहा कि हम ढेले प्रयोग करने के साथ-साथ पानी भी प्रयोग करते हैं। (इब्ने कसीर) इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि यह आयत इस बात का प्रमाण है कि ऐसी प्राचीन मस्जिद में नमाज़ पढ़ना उत्तम है, जो अल्लाह मात्र की इबादत के उद्देश्य से निर्मित की गयी हो। इसके अतिरिक्त महापुरूषों के ऐसे गिरोह के साथ नमाज़ पढ़ना उत्तम है जो पूर्ण वज़ू करने तथा पवित्रता तथा शुद्धता का ठीक प्रकार से प्रयोजन करने वाले हों।

[3]इसमें ईमानवालों तथा पाखण्डियों के कर्मों के उदाहरण दिये गये हैं। ईमानवालों का कर्म अल्लाह के भय पर तथा उसकी प्रसन्नता के लिए होता है, जबकि पाखण्डियों का

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِىْ بَنَوْا رِيْبَةً فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١١٠﴾

(११०) उनका यह भवन जिसे उन्होंने बनाया है सदा उन के दिलों में दुविधा के आधार पर (काँटा बनकर) खटकता रहेगा, परन्तु यह कि उनके दिल ही खंड-खंड हो जायें,[1] तथा अल्लाह ज्ञानी एवं हिक्मत वाला है।

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَ يُقْتَلُوْنَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِى التَّوْرٰىةِ وَ الْاِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِىْ

(१११) नि:संदेह अल्लाह ने मुसलमानों से उनके प्राणों तथा धनों को स्वर्ग के बदले[2] ख़रीद लिया है, वह अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं जिसमें हत करते एवं हत होते हैं, उस पर सत्य वचन है तौरात तथा इंजील एवं क़ुरआन में। तथा अल्लाह से अधिक अपने वचन का पालन कौन कर सकता है?[3] अत: तुम अपने इस विक्रय पर जो कर लिये हो

कर्म पाखण्ड तथा उपद्रव पर आधारित होता है जो धरती के उस क्षेत्र के भाँति है जिसके नीचे से घाटी का पानी बहता है तथा मिट्टी को साथ बहा ले जाता है, वह क्षेत्र नीचे से खोखला हो जाता है जिस पर कोई भी निर्माण किया जाये वह गिर पड़ेगा। इन पाखण्डियों का मस्जिद बनाने का कार्य भी ऐसा ही है, जो उन्हें नरक में साथ ले गिरेगा।

[1]दिल खण्ड-खण्ड हो जाये का अर्थ है मृत्यु आ जाये। अर्थात मृत्यु तक यह भवन उनके दिलों में अन्य शंका तथा भेद उत्पन्न करने का साधन बना रहेगा। जिस प्रकार बछड़े के पुजारियों में बछड़े का प्रेम रच-बस गया था।

[2]यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा व दया का वर्णन है कि उसने ईमान वालों को उनके प्राण तथा धन के बदले जो उन्होंने अल्लाह के मार्ग में ख़र्च किये, स्वर्ग प्रदान कर दिये, जबकि यह प्राण तथा धन भी उसी का प्रदान किया हुआ है। फिर मूल्य अथवा बदला भी जो प्रदान किये अर्थात स्वर्ग वह अत्यन्त बहुमूल्य है।

[3]यह उसी सौदे का पुनरावृत्ति है कि अल्लाह तआला ने यह सच्चा वायदा पिछली किताबों में भी एवं क़ुरआन में भी किया है, और अल्लाह से अधिक वचन को पूरा करने वाला कौन हो सकता है?

بَايَعْتُم بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾

प्रफुल्ल हो जाओ,[1] और यह बड़ी सफलता है।

التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾

(११२) वे ऐसे हैं जो तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, (ईश्वर का) महिमागान करने वाले, रोज़ा (व्रत) रखने वाले, (अथवा सत्य मार्ग पर यात्रा करने वाले) रूकुअ तथा सजदा करने वाले अच्छी बातों की शिक्षा देने वाले तथा बुरी बातों से रोकने वाले तथा अल्लाह के नियमों को ध्यान में रखने वाले हैं।[2] तथा ऐसे ईमानवालों को शुभसूचना सुना दीजिए।[3]

---

[1]यह मुसलमानों को कहा जा रहा है, परन्तु वह खुशी उसी समय मनायी जा सकती है जब मुसलमानों को भी यह सौदा स्वीकार हो। अर्थात अल्लाह के मार्ग में प्राण तथा माल के बलिदान से उन्हें पीछे नहीं हटना है।

[2]यह इन्हीं ईमानवालों की अन्य विशेषताओं का वर्णन निरन्तर हो रहा है जिनके प्राणों तथा माल का सौदा अल्लाह ने कर लिया है। वे तौबा करने वाले अर्थात पापों तथा दोषों से। समयबद्ध रूप से अपने प्रभु की इबादत करने वाले, मुख से अल्लाह की महिमा तथा गुणों का वर्णन करने वाले तथा अन्य उन गुणों से युक्त हैं जो आयत में वर्णित हैं। سياحة से तात्पर्य अधिकतर व्याख्याकारों ने रोज़ा (व्रत) लिया है तथा इसी को इब्ने कसीर ने अत्यधिक उचित तथा अत्यधिक प्रसिद्ध कथन कहा है। तथा कुछ ने धर्मयुद्ध तात्पर्य लिया है। परन्तु इससे धरती का भर्मण तात्पर्य नहीं है जिस प्रकार कि कुछ लोगों ने समझा है। इसी प्रकार अल्लाह की इबादत (उपासना) के लिए पर्वतों की चोटियों, गुफ़ाओं तथा निर्जन स्थानों में जाकर डेरा लगा लेना भी इससे तात्पर्य नहीं है। इसलिए कि यह त्याग तथा बैराग का एक भाग है जो इस्लाम में नहीं है। परन्तु उपद्रव के समय अपने धर्म की रक्षा के लिये नगरों तथा आबादियों को त्याग कर जंगलों तथा वनों में जाकर रहने की अनुमति हदीस में दी गयी है। (सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान, बाब मिनद्दीन अल फ़िरार मिनल फ़ेतन व किताबुल फ़ेतन बाबुत तअर्रूब, अइस्सुकना मअल आराब फ़िल फ़ितन:)

[3]अर्थ यह है कि पूर्ण ईमानवाला वह है जो कथनी-करनी में इस्लाम की शिक्षाओं का सुन्दर उदाहरण हो तथा उन वस्तुओं से बचने वाला हो जिनसे अल्लाह ने रोक दिया है

(११३) पैग़म्बर तथा अन्य मुसलमानों को आज्ञा नहीं कि मूर्तिपूजकों के लिए क्षमा की प्रार्थना करें यद्यपि वे सम्बन्धी ही हों, इस आदेश के स्पष्ट होने के पश्चात कि ये लोग नरक में जायेंगे ।[1]

مَاكَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١١٣﴾

(११४) तथा इब्राहीम का अपने पिता के लिए मोक्ष की प्रार्थना करना वह मात्र वचन के

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ

तथा अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करने वाला नहीं अपितु उनका रक्षक हो। ऐसे ही पूर्ण ईमानवाले शुभसूचना के अधिकारी हैं। यह वही बात है जिसे क़ुरआन में آمنوا و عملوا الصالحات के शब्दों में बार-बार वर्णन किया गया है। यहाँ पुण्य के कार्यों का कुछ विस्तृत वर्णन कर दिया गया है।

[1]इसकी व्याख्या सहीह बुख़ारी में इस प्रकार की गयी है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रिय चाचा अबू तालिब का अन्तिम समय आ गया तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास गये जबकि उनके पास अबू जहल तथा अब्दुल्लाह बिन अबी उमैय्या भी बैठे हुए थे। आपने फ़रमाया "चाचा لا إله إلا الله पढ़ लें ताकि मैं अल्लाह के सामने आप के लिए तर्क प्रस्तुत कर सकूँ।" अबू जहल तथा अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या ने कहा "हे अबू तालिब क्या अब्दुल मुत्तलिब के धर्म से मुख मोड़ोगे ? (अर्थात मरते समय यह क्या करने लगे ? यहाँ तक कि इसी अवस्था में उनकी मृत्यु हो गयी)" नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "जब तक अल्लाह तआला की ओर से मुझे रोक नहीं दिया जायेगा, मैं आप के लिए क्षमा-याचना करता रहूँगा" जिस पर यह आयत उतरी जिसमें मूर्ति-पूजकों के लिए मोक्ष की प्रार्थना से रोक दिया गया। (सहीह बुख़ारी किताबुत तफ़सीर, सूर: तौब:) सूर: कसस की आयत ५६ إنك لا تهدي من أحببت भी इसी सम्बन्ध में उतरी। मुसनद अहमद के एक कथन में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी माता के लिए मोक्ष की प्रार्थना करने की आज्ञा माँगी, जिस पर यह आयत उतरी। (मुसनद अहमद भाग ५, पृष्ठ ३५५) तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मूर्तिपूजक समुदाय के लिए प्रार्थना की थी «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ» "हे अल्लाह मेरा समुदाय अज्ञानी है इस को क्षमा कर दे।" यह आयत के विपरीत नहीं है। इसलिए कि इसका अर्थ उनके मार्ग दर्शन की प्रार्थना है। अर्थात वे मेरे पद तथा गरिमा से अनभिज्ञ हैं। इसे मार्गदर्शन प्रदान कर ताकि मोक्ष के पात्र हो जायें। तथा जीवित काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों के लिए मार्ग दर्शन की प्रार्थना उचित है।

إِلَّا عَن مَّوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِّلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾

कारण था, जो उन्होंने उसे दिया था। फिर जब उन पर यह बात स्पष्ट हो गयी कि वह अल्लाह का शत्रु है, तो वह उससे असम्बन्धित मात्र हो गये,[1] वास्तव में इब्राहीम बड़े कोमल दिल सहनशील थे।[2]

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُم مَّا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

(११५) तथा अल्लाह ऐसा नहीं करता कि किसी समुदाय को मार्गदर्शन देने के पश्चात भटका दे जब तक उन बातों को साफ-साफ न बता दे जिनसे वे बचें।[3] नि:सन्देह अल्लाह हर वस्तु को भली-भाँति जानता है।

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١١٦﴾

(११६) नि:सन्देह अल्लाह ही का राज्य है आकाशों तथा धरती में। वही जिलाता तथा मारता है, तथा तुम्हारा अल्लाह के अतिरिक्त न कोई मित्र है न कोई सहायता करने वाला है।

---

[1]आदरणीय इब्राहीम पर भी जब यह बात स्पष्ट हुई कि मेरा पिता अल्लाह का शत्रु है तथा नरक में जाने वाला है, तो उन्होंने उससे अलगाव कर लिया तथा उसके पश्चात मोक्ष की प्रार्थना नहीं की।

[2]तथा प्रारम्भ में अपने पिता के लिए मोक्ष की प्रार्थना भी अपने इसी मृदल एवं सयंमी स्वभाव के कारण से थी।

[3]जब अल्लाह तआला ने मूर्तिपूजकों के पक्ष में क्षमादान करने की प्रार्थना से रोका तो कुछ सहाबा को जिन्होंने ऐसा किया था, यह शंका उत्पन्न हुई कि कहीं उन्होंने गुमराही का कार्य तो नहीं किया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला जब तक बचने वाले कार्यों का स्पष्टीकरण नहीं कर देता उस समय तक उस पर पकड़ भी नहीं करता, तथा न उसे भटकाव सिद्ध करता है। परन्तु जब उन कार्यों से नहीं बचता जिनसे रोका जा चुका है, तो फिर अल्लाह तआला उसे विपथ कर देता है। इसलिए जिन लोगों ने इससे पूर्व अपने मृतक सम्बन्धियों के लिए क्षमा की प्रार्थनायें की हैं उनकी पकड़ न होगी, क्योंकि उन्हें नियम का उस समय ज्ञान ही नहीं था।

لَقَدْ تَّابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَٰجِرِينَ وَالْأَنصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِن بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٧﴾

(११७) अल्लाह (तआला) ने पैग़म्बर (ईशदूत) की दशा पर ध्यान दिया तथा मोहाजिरों एवं अंसार की दशा पर भी जिन्होंने ऐसी तंगी के समय पैग़म्बर का साथ दिया[1] उसके पश्चात कि उनमें से एक गुट के दिल डाँवाडोल होने लगे थे [2] फिर अल्लाह ने उनकी दशा पर दया की। नि:सन्देह अल्लाह (तआला) उन सब पर अत्यधिक दयालु एवं कृपालु है।

وَعَلَى الثَّلَٰثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا

(११८) तथा तीन व्यक्तियों की स्थिति पर भी जिनका मामला स्थागित कर दिया गया था।[3]

---

[1]तबूक के युद्ध की यात्रा को कठिनाई (कष्ट) का समय कहा गया है। इसलिए कि एक तो कड़ी धूप का समय था, दूसरे फसलें तैयार थीं, तीसरे यात्रा लम्बी थी तथा चौथे साधन की कमी थी। इसलिये इसे جيش العسرة (कठिनाई की यात्रा अथवा सेना) कहा जाता है। तौबा के लिये आवश्यक नहीं कि पहले पाप अथवा त्रुटिपूर्ण कार्य हों। इसके बिना भी सम्मान प्राप्त करने के लिये तथा अनजाने में हो जाने वाली त्रुटियों के लिये तौबा होती है। यहाँ मोहाजिरों तथा अंसार के इस पहले गुट की तौबा इसी भाव में है, जो बिना किसी आनाकानी के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर धर्मयुद्ध के लिये तैयार हो गये।

[2]यह उस दूसरे गुट का वर्णन है जिसे उपरोक्त कारणों से प्रारम्भ में आलस्य हुआ। परन्तु फिर शीघ्र ही वह इस अवस्था से निकल आया तथा प्रसन्नता से धर्मयुद्ध में सम्मिलित हुआ। दिलों में आनाकानी से तात्पर्य धर्म के विषय में किसी प्रकार का कम्पन आनाकानी अथवा शंका नहीं है, अपितु वर्णित सांसारिक कारणों के आधार पर धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने में जो दुविधा तथा आलस्य था वह तात्पर्य है।

[3] خُلِّفُوا का वही अर्थ है जो مُرجَون का है अर्थात जिनका मामला स्थगित कर दिया गया था तथा पचास दिन के पश्चात उनकी तौबा स्वीकार हुई। यह तीन सहाबा थे काअब बिन मालिक, मुरार: बिन रबिअ तथा हिलाल बिन उमैय्या। यह पक्के मुसलमान थे। इससे पूर्व प्रत्येक धर्मयुद्ध में सम्मिलित होते रहे। इस तबूक के धर्मयुद्ध में आलस्य के कारण सम्मिलत नहीं हो सके। बाद में उन्हें अपनी ग़लती का आभास हुआ। सोचा एक त्रुटि (पीछे रहने की) तो हो ही गयी है। परन्तु पाखण्डियों के समान अब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समक्ष झूठा तर्क न प्रस्तुत करेंगे। अत:

حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتۡ عَلَيۡهِمُ الۡاَرۡضُ بِمَا رَحُبَتۡ وَضَاقَتۡ عَلَيۡهِمۡ اَنۡفُسُهُمۡ وَظَنُّوۡۤا اَنۡ لَّا مَلۡجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيۡهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيۡهِمۡ لِيَتُوۡبُوۡا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ﴿۱۱۸﴾

यहाँ तक कि जब धरती अपने विस्तार के उपरान्त भी उनके लिए संकुचित होने लगी तथा वे स्वयं अपने अस्तित्व से तंग आ गये ।[1] तथा उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से कहीं शरण नहीं मिल सकती सिवाय इसके कि उसकी ओर पलटा जाये, फिर उनकी दशा पर दया की ताकि वे भविष्य में भी तौबा कर सकें ।[2] निःसन्देह अल्लाह तआला अत्यधिक दयावान अत्यधिक दयालु है ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوۡنُوۡا مَعَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿۱۱۹﴾

(११९) ऐ ईमानवालो ! अल्लाह (तआला) से डरो तथा सच्चों के साथ रहो ।[3]

उपस्थित होकर अपनी त्रुटि को स्पष्टरूप से अंगीकार कर लिया तथा उसके दण्ड के लिये अपने आप को प्रस्तुत कर दिया । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके मामले को अल्लाह पर छोड़ दिया कि वह उनके विषय में कोई आदेश उतारेगा । फिर भी उस अवधि में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा कराम को इन तीनों से सम्बन्ध रखने यहाँ तक की बातचीत तक करने से रोक दिया तथा चालीस रातों के पश्चात उन्हें आदेश दिया गया कि वह अपनी पत्नियों से भी दूर रहें । अतः पत्नियों से भी वियोग हो गया तथा दस दिन व्यतीत होने के पश्चात तौबा स्वीकार कर ली गयी तथा वर्णित आयत उतरी । इस घटना की विस्तृत जानकारी आदरणीय काब बिन मालिक के कथनानुसार हदीस में विद्यमान है । देखिये (सहीह बुखारी किताबुल मग़ाज़ी बाब ग़ज़वः तबूक, मुस्लिम किताबुत तौबः बाब हदीस तोबते काअब बिन मालिक)

[1]यह उन दिनों का वर्णन है जिससे सामाजिक बहिष्कार के कारण उन्हें गुज़रना पड़ा ।

[2]अर्थात पचास दिन के पश्चात अल्लाह तआला ने उनकी विनय तथा तौबा (क्षमा-याचना) स्वीकार की ।

[3]सत्यता के कारण ही अल्लाह तआला ने इन तीन सहाबियों की त्रुटियों को न केवल क्षमा ही किया अपितु उनकी तौबा को क़ुरआन की आयत बनाकर उतारा رضي الله عنهم و رضوا عنه इसलिये ईमानवालों को आदेश दिया गया कि अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो । इसका अर्थ यह है कि जिसके दिल के अन्दर तक़वा (अर्थात अल्लाह का भय) होगा, वह सच्चा होगा तथा जो झूठा होगा समझ लो कि उसका दिल तक़वा से

(१२०) मदीना तथा उसके पड़ोस के ग्राम-वासियों के लिए उचित न था कि रसूलुल्लाह का साथ छोड़कर पीछे रह जायें[1] तथा न यह कि अपने प्राण को उनके प्राण से अधिक प्रिय समझें,[2] यह इस कारण से कि[3] उनको अल्लाह के मार्ग में जो प्यास लगी तथा जो थकान पहुँची एवं जो भूख लगी तथा जो चलना चले, जो काफ़िरों के लिए क्रोध का

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَ مَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

शून्य है। इसीलिये हदीस में आता है कि ईमानवालों से कुछ अन्य त्रुटियाँ तो हो सकती हैं, परन्तु वह झूठा नहीं हो सकता।

[1]तबूक के युद्ध के लिये सामान्य रूप से घोषणा कर दी गयी थी, इसलिये विवश, बूढ़े तथा अन्य धार्मिक कारण रखने वालों के सिवाय सभी के लिये इसमें सम्मिलित होना आवश्यक था, परन्तु फिर भी जो मदीनावासी तथा मदीने के निकटवर्ती क्षेत्रों के निवासी धर्मयुद्ध में सम्मिलत नहीं हुए अल्लाह तआला उन्हीं को सावधान करते तथा चेतावनी देते हुये कह रहा है कि उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पीछे नहीं रहना चाहिए था।

[2]अर्थात यह उनके लिये शोभा नहीं देता कि स्वंय अपने प्राणों की सुरक्षा कर लें तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्राणों की सुरक्षा का उन्हें ध्यान भी न हो, अपितु उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहकर अपने से अधिक उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए।

[3] ذلك से पीछे न रहने का कारण बताया है कि उन्हें इसलिये पीछे नहीं रहना चाहिए कि अल्लाह के मार्ग में उन्हें जो प्यास, थकावट, भूख पहुँचेगी अथवा ऐसा कार्य जिससे काफ़िरों का क्रोध बढ़े, इसी प्रकार शत्रुओं के आदमियों को हत करना अथवा बन्दी बनाना, यह सभी कार्य पुण्य कर्म लिखे जायेंगे अर्थात पुण्य का कार्य केवल यही नहीं कि कोई मस्जिद में अथवा किसी एक कोने में बैठकर ऐच्छिक से नमाज़ पढ़े, क़ुरआन पढ़े, अल्लाह को याद करे आदि बल्कि धर्मयुद्ध में घटित होने वाली कठिनाईयाँ तथा दुखों यहाँ तक कि वह योजनाएँ जिनसे शत्रुओं के हृदय में भय उत्पन्न हो अथवा उत्तेजित हों, इनमें से प्रत्येक कार्य अल्लाह के समक्ष पुण्य के कर्मों में लिखा जायेगा। इसलिये मात्र इबादत की अभिलाषा में भी धर्मयुद्ध से बचना उचित नहीं है तब तो बिना कारणों के ही मनुष्य धर्मयुद्ध से दूर क्यों ?

وَلَا يَطَـُٔونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُم بِهِۦ عَمَلٌ صَالِحٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٠﴾

कारण हुआ हो,[1] तथा शत्रुओं की जो कुछ सूचना ली,[2] उन सब पर उनके नाम (एक-एक) पुण्य कार्य लिखा गया। नि:सन्देह अल्लाह तआला नि:स्वार्थियों का बदला नष्ट नहीं करता।

وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾

(१२१) तथा जो भी छोटा तथा बड़ा उन्होंने ख़र्च किया तथा जितने मैदान उनको पार करने पड़े,[3] यह सब भी उनके नाम लिखा गया ताकि अल्लाह (तआला) उनके कामों का अच्छे से अच्छा प्रतिफल प्रदान करे।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا

(१२२) तथा मुसलमानों को यह न चाहिए कि सब के सब निकल खड़े हों, तो ऐसा क्यों न किया जाये कि उनके प्रत्येक बड़े गुट से छोटा गुट जाया करे ताकि वे धर्म को समझ-बूझकर प्राप्त करे तथा ताकि यह

---

[1]इससे तात्पर्य पैदल अथवा घोड़ों आदि पर सवार होकर ऐसे क्षेत्रों से गुज़रना है कि उनके कदमों की चापों तथा घोड़ों के टापों से शत्रुओं के दिल काँप जायें तथा उनमें क्रोध की अग्नि भड़क उठे।

[2] ولا ينالون من عدو نيلا (शत्रु से कोई वस्तु लेते हैं अथवा उनका समाचार लेते हैं) से तात्पर्य उनके आदमियों को मारते तथा बन्दी बनाते हैं, उन्हें पराजित करते हैं तथा परिहार प्राप्त करते हैं।

[3]पर्वतों के मध्य मैदान तथा पानी के निकास के मार्ग को घाटी कहते हैं। तात्पर्य यहाँ साधारण घाटियाँ तथा क्षेत्र हैं। अर्थात अल्लाह तआला के मार्ग में कम अथवा अधिक जितना भी ख़र्च करोगे, इसी प्रकार जितने भी मैदान तथा क्षेत्र पार करोगे (अर्थात धर्मयुद्ध में छोटी अथवा लम्बी यात्रा करोगे) यह सब पुण्य तुम्हारे कर्मपत्र में अंकित होंगे, जिन पर अल्लाह तआला अच्छे से अच्छा बदला प्रदान करेगा।

إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

लोग अपने समुदाय को जबकि वह उनके पास आयें, डरायें ताकि वे डर जायें ।[1]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ قَٰتِلُوا۟ ٱلَّذِينَ

(१२३) ऐ ईमानवालो ! उन काफ़िरों से लड़ो जो तुम्हारे आस-पास हैं ।[2] तथा उनको

---

[1]कुछ व्याख्याकारों के निकट इसका भी सम्बन्ध धर्मयुद्ध के आदेश से है । तथा अर्थ यह है कि पिछली आयतों में पीछे रहने वालों के लिये कड़ी चेतावनी तथा फटकार का वर्णन किया गया तो सहाबा कराम अति सर्तक हो गये तथा जब भी धर्मयुद्ध की बात आती तो सबके सब सम्मिलित होने का प्रयत्न करते । आयत में उन्हें आदेश दिया जा रहा है कि प्रत्येक धर्मयुद्ध इस प्रकार का नहीं होता कि प्रत्येक व्यक्ति का साथ लेना आवश्यक हो (जैसा कि तबूक में आवश्यक था) अपितु एक ही गुट का सम्मिलित होना पर्याप्त है । उनके निकट لِيَتَفَقَّهُوا से संबोधित पीछे रह जाने वाला गिरोह है । अर्थात एक गिरोह धर्मयुद्ध पर चला जाये وَبَقِيَ طائفة (यह लुप्त होगा) तथा एक गिरोह पीछे रहे जो धर्म शिक्षा प्राप्त करे तथा जब मुजाहिदीन (धर्मयुद्ध के सैनिक) वापस आयें तो उन्हें भी धर्म के नियमों से परिचित कराके अल्लाह से डरायें । दूसरी व्याख्या इसकी यह है कि इस आयत का सम्बन्ध धर्मयुद्ध से नहीं है, बल्कि इसमें धर्म की शिक्षा प्राप्त करने की महत्ता का वर्णन है, उसके प्रोत्साहन तथा मार्ग का स्पष्टीकरण है तथा वह यह है कि प्रत्येक बड़ा गुट अथवा क़बीले में से कुछ लोग धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के लिये अपना घर-बार छोड़ें तथा मदरसों तथा धार्मिक शिक्षा केन्द्रों पर जाकर उसे प्राप्त करें तथा फिर वापस आकर अपने समाज के समक्ष भाषण तथा दीक्षा दें धर्म में تفقه प्राप्त करने का अर्थ आदेश एवं मनाही के नियमों की शिक्षा प्राप्त करना है ताकि अल्लाह के आदेश का पालन कर सके तथा वातावरण की बुराई से बचते रहे तथा अपने समाज के लोगों को भलाई का आदेश दे तथा बुराई से रोके ।

[2]इसमें काफ़िरों से लड़ने के एक महत्वपूर्ण नियम का वर्णन किया गया है कि الأول فالأول तथा الأقربُ فالأقرب के अनुसार काफ़िरों से धर्मयुद्ध करना है जैसाकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रथम अरब द्वीप के अंदर निवास करने वाले मूर्तिपूजकों से युद्ध किया जब उनसे छूटे तो अल्लाह तआला ने मक्का, तायफ़, यमन, यमामा, हिज्र, खैबर, हदरमुत आदि स्थानों पर मुसलमानों का अधिपत्य जमा दिया तथा अरब के सारे क़बीले झुंड के झुंड इस्लाम धर्म में प्रवेश करने लगे तो फिर अहले किताब से युद्ध प्रारम्भ किया तथा ९ हिजरी में रोम वासियों से युद्ध करके तबूक की ओर प्रस्थान किया, जो अरब महाद्वीप के निकट है । इसी के आधार पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के पश्चात खुलफ़ाये राशदीन ने रोम के ईसाईयों से युद्ध किया तथा ईरान के अग्नि पूजकों से युद्ध किया ।

يَلُونَكُم مِّنَ ٱلْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا۟ فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

तुम्हारे अन्दर कठोरता पाना चाहिए ।[1] तथा यह विश्वास करो कि अल्लाह तआला तक़्वा (संयम) वालों के साथ है ।

وَإِذَا مَآ أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُم مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِۦٓ إِيمَٰنًا ۚ فَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَزَادَتْهُمْ إِيمَٰنًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) तथा जब कोई सूरः उतारी जाती है तो कुछ (द्वयवादी) कहते हैं कि इस सूरः ने तुम में से किसके ईमान को बढ़ाया है ।[2] तो जो लोग ईमानदार हैं इस सूरः ने उनके ईमान में प्रगति प्रदान की है तथा वे प्रसन्न हो रहे हैं ।[3]

وَأَمَّا ٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا۟ وَهُمْ كَٰفِرُونَ ﴿١٢٥﴾

(१२५) तथा जिनके दिलों में रोग है, इस सूरः ने उनमें उनकी मलीनता के साथ और मलीनता बढ़ा दी है तथा वे कुफ़्र की अवस्था ही में मर गये ।[4]

---

[1]अर्थात काफ़िरों के लिये मुसलमानों के दिलों में किसी प्रकार की कोमलता नहीं होनी चाहिये । कठोरता होनी चाहिए, जैसाकि "أشداء على الكفار رحماء بينهم" में सहाबा के गुणों का वर्णन है । इसी प्रकार *सूरः अल-मायदः*, ५४ में ईमानवालों के गुण हैं "أذلة على المؤمنين أعزة على الكافرين" ।

[2]इस सूरः में पाखण्डियों के जिन कर्मों का पर्दा उठाया गया है, ये आयतें उनका परिशिष्ट एवं पूरक हैं । इसमें बताया जा रहा है कि जब उनकी अनुपस्थिति में कोई सूरः अथवा उसका कोई भाग उतरता तथा उनके ज्ञान में बात आती, तो वे उपहास तथा परिहास के रूप में एक-दूसरे से कहते कि इससे तुममें से किस के ईमान में अधिकता हुई ।

[3]अल्लाह तआला ने फ़रमाया, जो भी सूरः उतरती है उससे ईमानवालों के ईमान में अवश्य अधिकता होती है तथा वे अपने ईमान की उन्नति पर प्रसन्न होते हैं । यह आयत भी इस बात का प्रमाण है कि ईमान में कमी तथा अधिकता होती है जिस प्रकार कि मुहद्देसीन का मत है ।

[4]रोग से तात्पर्य द्वयवाद तथा अल्लाह की आयतों के विषय में शंका तथा संदेह है । फ़रमाया "परन्तु यह सूरः पाखण्डियों को उनके पाखण्ड तथा दुष्टता में अधिकता करती है तथा वह अपने कुफ़्र तथा मिथ्याचार में इस प्रकार दृढ़ हो जाते हैं कि उन्हें तौबा का

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

(१२६) तथा क्या उनको नहीं दिखायी देता कि यह लोग प्रत्येक वर्ष एक बार अथवा दो बार किसी न किसी आपत्ति में डाले जाते हैं, फिर भी न प्रायश्चित करते हैं न शिक्षा ग्रहण करते हैं ।[1]

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرَاكُم مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ انصَرَفُوا ۚ صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُم بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) तथा जब कोई सूर: उतारी जाती है तो एक-दूसरे को देखने लगते हैं कि तुमको कोई देखता तो नहीं फिर चल देते हैं ।[2] अल्लाह (तआला) ने उनका दिल मोड़ दिया है, इस कारण कि वे नासमझ लोग हैं ।[3]

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ

(१२८) तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर (ईशदूत) का आगमन हुआ है जो तुम्हारी ही जाति से

तौबा का सौभाग्य नहीं होता तथा कुफ्र (अर्धम) पर ही उनका अन्त हो जाता है ।" जिस प्रकार अल्लाह तआला ने अन्य स्थान पर फ़रमाया, "हम क़ुरआन में ऐसी बातें उतारते हैं जो ईमानवालों के लिये स्वास्थ्यवर्धक तथा कृपा है । परन्तु अल्लाह तआला उनसे अत्याचारियों की हानि में बढ़ोत्तरी ही करता है ।" (सूर: *बनी इस्राईल*-८२) यह जैसे कि उनके दुर्भाग्य की चरम सीमा है कि जिससे लोगों के दिल मार्गदर्शन पाते हैं वही बातें उनके अपमान, अनादर, हानि तथा अन्त का कारण बनती हैं । जिस प्रकार से किसी भी व्यक्ति की पाचन क्रिया बिगड़ जाये तो वह भोजन जिससे अन्य लोग शक्ति तथा स्वाद प्राप्त करते हैं, उसके रोग में और भी बिगाड़ तथा खराबी का कारण बनता है ।

[1] يُفتنون का अर्थ है, परीक्षा ली जाती है । आपत्ति से तात्पर्य या तो आकाशीय प्रकोप है । जैसे अकाल आदि (परन्तु यह दूर है) अथवा शारीरिक रोग तथा दुख हैं अथवा युद्ध हैं जिनमें सम्मिलित होने के अवसर पर उनकी परीक्षा होती है ।

[2] अर्थात उनकी उपस्थिति में सूर: उतरती जिसमें पाखण्डियों के दुराचारों एवं षड़यन्त्रों की ओर संकेत होता तो फिर यह देखकर कि मुसलमान उन्हें देख तो नहीं रहे हैं, चुपचाप खिसक जाते हैं ।

[3] अर्थात अल्लाह की आयतों पर मनन-चिंतन तथा विचार न करने के कारण अल्लाह तआला ने उनके दिलों को पुण्य तथा भलाई के कार्यों से फेर दिया है ।

हैं,[1] जिनको तुम्हारी हानि की बातें अत्यन्त भारी लगती हैं,[2] जो तुम्हारे लाभ के बड़े इच्छुक रहते हैं,[3] ईमान वालों के लिए अत्यन्त ही करूणाकारी कोमल हृदय हैं ।[4]

عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٨﴾

(१२९) फिर यदि मुख मोड़ें[5] तो (आप) कह दीजिए कि मेरे लिए अल्लाह बस है,[6] उसके अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं । मैंने उसी

فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

[1]सूरः के अन्त में मुसलमानों पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रूप में जो महान उपकार किया गया है उसका वर्णन किया जा रहा है । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रथम विशेषता यह वर्णन की जा रही है कि वह तुम्हारी जाति से हैं अर्थात पुरूष के रूप में हैं (वह दिव्य प्रकाश अथवा अन्य कुछ नहीं) जैसाकि दुर्आस्था के शिकार लोग जनता को इस प्रकार के गौरख धन्धे में फसाते हैं ।

[2] عَنِتّ ऐसी वस्तुऐं जिनसे मनुष्य को दुख हो, इसमें साँसारिक दुख तथा आख़िरत की यातनायें दोनों आ जाती हैं । इस पैग़म्बर पर तुम्हारी हर प्रकार की कठिनाई तथा कष्ट दुखदायी होती हैं । इसीलिये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मैं सरल धर्म एकेश्वरवाद प्रदान करके भेजा गया हूँ ।" (मुसनद अहमद भाग ५, पृष्ठ २६६, भाग ६, पृष्ठ २३३) एक अन्य हदीस में फ़रमाया «إِنَّ هَٰذَا الدِّينَ يُسْرٌ» (सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान) यह धर्म सरल है ।

[3]तुम्हारे मार्गदर्शन तथा तुम्हारे साँसारिक तथा पारलौकिक लाभ की कामना करने वाले हैं । तुम्हारा नरक में जाना प्रिय नहीं समझते । इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मैं तुम्हें तुम्हारी पीठ पकड़-पकड़ कर खींचता हूँ, परन्तु तुम मुझसे दामन छुड़ाकर स्वंय ही नरक की आग में प्रवेश करते हो ।" (सहीह बुख़ारी किताबुर्रिकाक़ बाबुल इन्तेहाये मिनल मआसी)

[4]यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चौथी विशेषता का वर्णन किया गया है । यह सभी विशेषतायें आपके उच्च व्यवहार तथा नम्र स्वभाव की सूचक है । नि:सन्देह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अत्यन्त सुशील हैं । सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ।

[5]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लाये धार्मिक नियम तथा शान्ति-धर्म से ।

[6]जो कुफ्र तथा मुख मोड़ने वालों के पाखण्ड तथा षडयंत्र से मुझे बचा लेगा ।

وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾

पर भरोसा किया तथा वह विशाल अर्श (सिंहासन) का मालिक (स्वामी) है।[1]

سُوْرَةُ يُوْنُسَ

सूरतु यूनुस-१०

सूर: यूनुस मक्के में उतरी[2] तथा इसकी एक सौ नौ आयतें हैं तथा ग्यारह रूकुअ हैं।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾

(१) अलिफ॰ लाम॰ रा॰। यह तत्वज्ञान भरी किताब की आयतें हैं।[3]

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ

(२) क्या उन लोगों को इस बात से आश्चर्य हुआ[4] कि हमने उनमें से एक व्यक्ति के पास

---

[1]आदरणीय अबूद दरदा फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति यह आयत حسبي الله प्रात: तथा सायंकाल सात-सात बार पढ़ लेगा, अल्लाह तआला उसकी चिंताओं (चिन्ता तथा कठिनाई) को पर्याप्त हो जायेगा (सुनन अबू दाऊद संख्या ५०८१)

[2]सूर: यूनुस मक्की है, परन्तु इसकी दो आयतें तथा कुछ ने तीन आयतें मदनी बतायी हैं (फ़तहुल कदीर)

[3] الحكيم। किताब अर्थात क़ुरआन मजीद का विशेषण है। इसका एक तो वही अर्थ है जो अनुवाद में प्रयोग किया गया है। इसके अन्य भी कई अर्थ किये गये हैं। जैसे المحكم अर्थात हलाल तथा हराम एवं नियम तथा आदेश में दृढ़ है। حكيم का अर्थ حاكم (अधिकारी) के, अर्थात मतभेद में लोगों के मध्य निर्णय करने वाली किताब (सूर: *अल-बकर:*, २३) حكيم का अर्थ محكوم فيه अर्थात अल्लाह तआला ने इसमें न्याय के साथ निर्णय किये हैं।

[4]प्रश्न आश्चर्य को नकारने के लिये है, जिसमें निन्दा का भाव भी सम्मिलित है। अर्थात इस बात पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने मनुष्यों में से ही एक व्यक्ति को आदेश (प्रकाशना) तथा रिसालत के लिये चुन लिया, क्योंकि उनके अपने सहजाति होने के कारण वह उचित अर्थों में उनका मार्ग दर्शन कर सकता है। यदि वह किसी अन्य जाति से होता तो फ़रिश्ता अथवा जिन्न होता तथा दोनों ही परिस्थितियों में रिसालत (संदेश पहुंचाने) का मूल उद्देश्य समाप्त हो जाता, इसलिए कि मनुष्य उससे

वह्यी (प्रकाशना) भेज दी कि सभी मानवगण को डराइये तथा जो ईमान ले आये उनको यह शुभ सूचना सुना दीजिए कि उनके प्रभु के पास उन को पूरा प्रतिफल एवं सम्मान मिलेगा [1] काफ़िरों ने कहा कि यह व्यक्ति नि:सन्देह स्पष्ट जादूगर (तांत्रिक) है ।[2]

إِلَىٰ رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِندَ رَبِّهِمْ ۗ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾

(३) नि:सन्देह तुम्हारा पोषक ही है जिसने छः दिनों में आकाशों तथा धरती को पैदा कर दिया फिर अर्श पर स्थिर हुआ ।[3] वह प्रत्येक कार्य का प्रयोजन करता है ।[4] उसकी आज्ञा के बिना उसके पास कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं,[5] ऐसा अल्लाह तुम्हारा

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۖ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۖ مَا مِن شَفِيعٍ إِلَّا مِن بَعْدِ إِذْنِهِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ

लगाव रखने के बजाय भय का आभास करते । दूसरे, इनके लिए उसको देखना भी संभव न होता । तथा यदि हम किसी जिन्न अथवा फ़रिश्ते को मनुष्य के शरीर में भेज देते, तो फिर वही आरोप होता कि यह तो हमारी तरह का ही मनुष्य है । इसलिये इनके इस आश्चर्य में कोई सार्थकता नहीं है ।

[1] ﴿قَدَمَ صِدْقٍ﴾ का अर्थ उच्च पद, अच्छा बदला तथा पुण्य का कार्य है, जो एक ईमानवाला आगे भेजता है ।

[2] काफ़िरों को जब नकारने के लिये कोई अन्य बात न सूझती तो यह कहकर भाग निकलते कि यह तो जादूगर है । نعوذ بالله

[3] इसकी व्याख्या के लिये देखें सूर: *अल-आराफ़* आयत संख्या ५४ की व्याख्या ।

[4] अर्थात आकाश तथा धरती की सृष्टि करके उसने उसे यूँ ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि सारी सृष्टि का नियंत्रण एवं संचालन इस प्रकार कर रहा है कि कभी किसी का आपस में टकराव नहीं हुआ, प्रत्येक वस्तु उसके निर्देशानुसार अपने-अपने कार्य में व्यस्त है ।

[5] मूर्तिपूजक तथा काफ़िर जो मूलरूप से सम्बोधित थे, उनका विश्वास था कि ये मूर्तियाँ जिनकी वे पूजा करते थे, अल्लाह के समक्ष उनकी सिफ़ारिश करेंगी तथा उनको अल्लाह की यातना से मुक्त करा देंगी । अल्लाह तआला ने फ़रमाया, वहाँ अल्लाह की आज्ञा के बिना किसी को सिफ़ारिश करने की अनुमति ही नहीं होगी, तथा यह आज्ञा भी

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣﴾

स्वामी है, तो तुम उस की इबादत करो ।[1] क्या तुम फिर भी शिक्षा ग्रहण नहीं करते ?

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ إِنَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٤﴾

(४) तुम सबको अल्लाह ही के पास जाना है, अल्लाह ने सच्चा वादा कर रखा है । नि:सन्देह वही प्रथम बार पैदा करता है फिर वही पुन: पैदा करेगा ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाये तथा उन्होंने पुण्य के कार्य किये, न्याय के साथ बदला दे तथा जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिए खौलता हुआ पानी पीने को मिलेगा तथा कष्टदायी यातना होगी उनके कुफ़्र के कारण ।[2]

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُ مَنَازِلَ

(५) वह (अल्लाह तआला) ऐसा है जिसने सूर्य को प्रकाशमान बनाया तथा चन्द्रमा को ज्योतिर्मय बनाया ।[3] तथा उसके लिए स्थान

उन लोगों के लिए होगी जिनको अल्लाह तआला प्रिय समझेगा । ﴿وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ﴾ (सूर: अल-अम्बिया,२८) "لا تغني شفاعتهم شيئا إلا من بعد أن يأذن الله لمن يشاء و يرضى" (सूर: अन-नज्म, २६)

[1]अर्थात ऐसा अल्लाह जो सृष्टि का स्रष्टा भी है तथा उसका नियोजक एवं संचालक भी इसके अतिरिक्त सभी अधिकारों का पूर्ण मालिक है, वही इस योग्य है कि उसकी इबादत (आराधना) की जाये ।

[2]इस आयत में प्रलय के आने, अल्लाह के समक्ष सभी के एकत्रित होने, बदले तथा दण्ड का वर्णन है । यह विषय क़ुरआन करीम में विभिन्न शैली से विभिन्न स्थान पर वर्णन हुआ है ।

[3] ضياء का समार्थी ضوء है । सबंध्य यहाँ लोप है । ذات ضياء و القمر ذا نور सूर्य को चमकने वाला तथा चन्द्रमा को प्रकाश वाला बनाया । अथवा फिर उन्हें अतिश्योक्ति पर आधारित किया जावे जैसाकि यह स्वंय प्रकाश एवं कान्ति हैं । आकाश तथा धरती की सृष्टि तथा उनके नियोजित होने के वर्णन के पश्चात उदाहरण स्वरूप कुछ अन्य वस्तुओं का वर्णन किया जा रहा है, जिसका सम्बन्ध सृष्टि नियोजन से है, जिसमें सूर्य तथा चन्द्रमा का महत्वपूर्ण स्थान है । सूर्य की गर्मी, ताप तथा उसका प्रकाश कितना

(गंतव्य) निर्धारित किये ताकि तुम वर्षों की गणना कर सको तथा गणना (हिसाब) को जान लो ।[1] अल्लाह तआला ने ये सभी वस्तुऐं व्यर्थ नहीं पैदा कीं । वह यह प्रमाण उन्हें साफ़ बता रहा है जो बुद्धि रखते हैं ।

لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝

(६) निःसन्देह रात-दिन के एक-दूसरे के बाद आने में तथा अल्लाह तआला ने आकाश तथा धरती में जो कुछ पैदा कर रखा है, उन सब में उन लोगों के लिए प्रमाण हैं जो अल्लाह का डर रखते हैं ।

اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝

आवश्यक है, उसे हर बुद्धि रखने वाला व्यक्ति जानता है । इसी प्रकार चन्द्रमा के प्रकाश से जो आनन्द तथा लाभ है उसे वर्णन करने की आवश्यकता नहीं । वैज्ञानिकों का विचार है कि सूर्य का प्रकाश स्वयं उसका है तथा चन्द्रमा का प्रकाश दूसरे से है, अर्थात सूर्य से प्राप्त है । (फ़तहुल कदीर)

[1]अर्थात हमने चन्द्रमा का गंतव्य निर्धारित कर दिया है । इन स्थानों से तात्पर्य वह दूरी है जो वह एक रात तथा एक दिन में अपनी निर्धारित गति के साथ पूरी करता है । यह २८ गंतव्य हैं । प्रत्येक रात को एक स्थान पर पहुँचता है, जिसमें कभी त्रुटि नहीं होती । पहली अवस्था में वह क्षीण तथा पतला दिखाई पड़ता है, फिर निरन्तर बड़ा होता चला जाता है, यहाँ तक चौदहवीं रात्रि अथवा चौदहवीं अवस्था में पूर्ण चन्द्रमा हो जाता है । इसके पश्चात फिर वह सिकुड़ने लगता है तथा पतला होने लगता है । यहाँ तक कि अन्त में एक अथवा दो रात्रि गुप्त रहता है । तथा पुनः सोम बनकर उदित होता है । इसका यह लाभ बताया गया है कि तुम वर्षों की गणना तथा हिसाब जान सको । अर्थात चन्द्रमा की इन स्थितियों तथा गति से महीने तथा वर्ष बनते हैं, जिनसे तुम्हें हर चीज़ का हिसाब करने में सुविधा होती है । अर्थात वर्ष १२ महीना का तथा महीना २९ अथवा ३० दिन का । एक दिन चौबीस घंटे अर्थात रात्रि तथा दिन का । जो बराबर दिन रात में १२-१२ घंटे तथा सर्दी एवं गर्मी में क्षीण तथा बड़े होते हैं । इसके अतिरिक्त सांसारिक लाभ तथा व्यापार ही इन अवस्थाओं से सम्बन्धित नहीं धार्मिक लाभ भी इससे प्राप्त होते हैं । इसी चन्द्रोदय से हज, रमजान के रोज़े, सम्मानित महीने तथा अन्य इबादतों का निर्धारण होता है जिनका प्रायोजन ईमानवाला करता है ।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَافِلُونَ ﴿٧﴾

(७) जिन लोगों को हमारे पास आने का विश्वास नहीं है, तथा वह साँसारिक जीवन पर प्रसन्न हो गये हैं तथा उसमें जी लगा बैठे हैं तथा जो लोग हमारी आयतों से विमुख हैं।

أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨﴾

(८) ऐसे लोगों का ठिकाना (स्थान) उनके कर्मों के कारण नरक है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٩﴾

(९) निःसन्देह जो लोग ईमान लाये तथा उन्होंने पुण्य कार्य किये उनका पालनहार उनको ईमान वाले होने के कारण (उनके लक्ष्य तक) पहुँचा देगा,[1] सुख के बाग़ों में जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी।

دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۚ وَآخِرُ

(१०) वहाँ उनके मुख से यह बात निकलेगी 'सुब्हानल्लाह'[2] तथा उनका आपसी सलाम (अभिवादन) यह होगा 'अस्सलामु अलैकुम'[3]

---

[1]इसका एक अन्य अनुवाद यह किया गया है कि संसार में ईमान के कारण प्रलय के दिन अल्लाह तआला उनके लिये पुल सिरात से गुज़रना सरल कर देगा, कुछ के निकट यह अल्लाह तआला से सहायता प्राप्त करने के लिये है तथा अनुवाद यह होगा कि अल्लाह तआला प्रलय के दिन उनके लिये एक दिव्य ज्योति उपलब्ध करेगा जिसके प्रकाश में वे चलेंगे जैसाकि सूरः हदीद में इसका वर्णन आता है।

[2]अर्थात स्वर्ग में जाने वाले हर क्षण अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा में लीन होंगे। जिस प्रकार हदीस में आता है : "स्वर्ग के निवासियों के मुख से अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा इस प्रकार निकलेगी जिस प्रकार साँस निकलती है।" (सहीह मुस्लिम किताबुल जन्नः व सिफ़ति नईमेहा, बाबुन फ़ी सिफ़ातिल जन्नः व अहलेहा व तस्बीहेहिम फ़ीहा बुकरतन व अशीया) अर्थात जिस प्रकार निरन्तर साँस का अन्दर आना तथा बाहर जाना रहता है, उसी प्रकार स्वर्ग वालों के मुख पर बिना किसी प्रयोजन के अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा के गुणगान रहेंगे।

[3]अर्थात एक-दूसरे को इस प्रकार सलाम करेंगे, इसी प्रकार फ़रिश्ते भी उन्हें सलाम करेंगे।

دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠

तथा उनकी अन्तिम बात यह होगी कि सारी प्रशंसाएं अल्लाह ही के लिए हैं जो अखिल जगत का पालनहार है।

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝١١

(११) तथा यदि अल्लाह लोगों को तुरंत हानि पहुँचा देता जैसे लोग तुरंत लाभ चाहते हैं तो उनका वचन कभी का पूरा हो चुका होता।[1] तो हम उन लोगों को जिन्हें हमारे पास आने का विश्वास नहीं है उनके हाल पर छोड़ देते हैं कि वे अपनी उदण्डता में भटकते रहें।

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا

(१२) तथा जब मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचता है, तो हमको पुकारता है लेटे भी, बैठे भी, खड़े भी। फिर जब हम उसके कष्ट

---

[1]इसका एक अर्थ यह है कि जिस प्रकार मनुष्य पुण्य को प्राप्त करने में शीघ्रता करता है, उसी प्रकार अशुभ (यातना) को प्राप्त करने में भी शीघ्रता करता है, अल्लाह के पैग़म्बरों (ईशदूतों) से कहता है यदि तुम सच्चे हो तो वह यातना लेकर आओ जिससे तमु डराते हो। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि उनकी इस माँग के अनुसार हम शीघ्र यातना भेज देते, तो कभी के यह मृत्यु तथा विनाश का स्वाद चख चुके होते। परन्तु हम उनको समय देकर पूर्ण अवसर प्रदान करते हैं। दूसरा अर्थ यह है कि जिस प्रकार मनुष्य अपने लिये पुण्य तथा भलाई की प्रार्थनाऐं करता है, जिन्हें हम स्वीकार करते हैं। इसी प्रकार जब मनुष्य क्रोध अथवा कष्ट में होता है, तो अपने लिये तथा अपनी संतान आदि के लिये शाप की प्रार्थना करता है, जिन्हें हम इसलिये अनदेखा कर देते हैं कि यह मुख से विनाश माँग रहा है, परन्तु दिल में उसका ऐसा विचार नहीं है। परन्तु यदि हम मनुष्य के शाप की माँग के अनुसार उन्हें तुरन्त विनाश में डाल दें, तो फिर शीघ्र ही यह लोग मृत्यु का स्वाद चख लें, इसीलिये हदीस में आता है : "तुम अपनी संतान के लिये तथा अपने माल-व्यापार के लिये अपशब्द मत निकाला करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे अपशब्द उस क्षण को प्राप्त कर लें, जिस समय अल्लाह की ओर से प्रार्थनाऐं स्वीकार की जाती हैं। अतः वह तुम्हारे अपशब्द स्वीकार कर ले।" (सुनन अबी दाऊद, किताबुल वित्र, बाबुन नहये अन यदअऊल इन्सान अला अहलेही व मालेही, तथा मुस्लिम किताबुल ज़ुहद, फ़ी हदीस जाबिर अत-तवील)

كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَن لَّمْ يَدْعُنَآ إِلَىٰ ضُرٍّ مَّسَّهُ ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾

को दूर कर देते हैं, तो वह ऐसा हो जाता है कि जैसे उसने अपने कष्ट के लिए जो उसे पहुँचा था कभी हमें पुकारा ही नहीं था।[1] इन सीमा उल्लंघन करने वालों के कर्म को उनके लिए उसी प्रकार प्रिय प्रतीत होने वाला बना दिया गया है।[2]

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِن قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَٰتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٣﴾

(१३) तथा हमने तुमसे पूर्व बहुत से ऐसे गिरोहों को नष्ट कर दिया जबकि उन्होंने अत्याचार किया, यद्यपि उनके पास उनके पैग़म्बर भी निशानियाँ लेकर आये तथा वे कब ऐसे थे कि ईमान ले आते ? हम

---

[1]यह मनुष्य की उस अवस्था का वर्णन है जो मनुष्य के बहुमत की करनी है। बल्कि बहुत से अल्लाह के मानने वाले भी इस आलस्य का कार्य सामान्य रूप से करते हैं कि दुख के समय अत्यधिक अल्लाह-अल्लाह हो रहा है, प्रार्थनायें की जा रही हैं, तौबा तथा क्षमा-याचना का प्रयोजन हो रहा है। परन्तु जब अल्लाह तआला दुख का वह कठोर समय निकाल देता है, तो फिर अल्लाह के दरबार में विनय एवं प्रार्थना से भी अनजान हो जाते हैं तथा अल्लाह ने उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार करके जिस कठिनाईयों से स्वतन्त्रता दिलायी उस पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करने का भी सौभाग्य उनको नहीं होता।

[2]यह कर्मों की शोभा परीक्षा एवं अवसर के अनुरूप अल्लाह की ओर से भी हो सकती है, शंकाओं के द्वारा शैतान की ओर से भी हो सकती है तथा मनुष्य के उस इन्द्रीय की ओर से भी हो सकती है, जो मनुष्य को बुराई करने पर तैयार करता है। ﴿إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوٓءِ﴾ (सूर: यूसुफ़, ५३) फिर भी इसके शिकार वही लोग होते हैं जो सीमा पार कर जाते हैं। यहाँ अर्थ यह हुआ कि उनके लिये प्रार्थना से मुँह मोड़ना, अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करने में आलस्य तथा इच्छाओं तथा इन्द्रियों के साथ कर्म सुशोभित कर दिया गया है। (फ़तहुल क़दीर)

अपराधी लोगों को इसी प्रकार दण्ड दिया करते हैं ।[1]

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

(१४) फिर उनके पश्चात हमने संसार में उनके स्थान पर तुमको बसाया,[2] ताकि हम देख लें कि तुम कैसे कार्य करते हो ।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ۗ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾

(१५) तथा जब उनके समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं[3] जो बिल्कुल स्पष्ट हैं, तो यह लोग जिनको हमारे पास आने का विश्वास नहीं है, इस प्रकार कहते हैं कि इसके अतिरिक्त अन्य क़ुरआन लाईये[4] अथवा इसमें कुछ परिर्वतन कर दीजिए, (आप सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम) यह कह दीजिए कि मुझे यह अधिकार नहीं कि अपनी ओर से उसमें परिवर्तन कर दूँ,[5] बस मैं तो उसी का पालन करूँगा जो मेरे पास वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा मेरे पास आयी है । यदि मैं अपने प्रभु

---

[1]यह मक्का के काफ़िरों को चेतावनी है कि पूर्व के समुदायों की भाँति तुम भी विनाश का सामना कर सकते हो ।

[2] خلائف बहुवचन है خليفة का । इसके अर्थ हैं, जो विगत समुदायों का स्थान ले अथवा एक समुदाय जो दूसरे की जगह ले ।

[3]अर्थात जो अल्लाह के पूज्य तथा एक होने का प्रमाण है ।

[4]अर्थ यह है कि या तो इस पवित्र क़ुरआन के स्थान पर दूसरा लायें अथवा फिर इसमें हमारी इच्छानुसार परिवर्तन करें ।

[5]अर्थात मुझसे दोनों ही बातें सम्भव नहीं, क्योंकि मुझे इसमें किसी प्रकार के परिवर्तन की भी शक्ति नहीं ।

की अवज्ञा करूँ तो मैं एक बड़े दिन की यातना का भय रखता हूँ ।[1]

(१६) (आप) कह दीजिए कि यदि अल्लाह ने चाहा होता तो न तो मैं तुमको वह पढ़कर सुनाता तथा न अल्लाह (तआला) तुमको उसकी सूचना देता,[2] क्योंकि इससे पूर्व तो मैं एक दीर्घ आयु तक तुम में रह चुका हूँ। फिर क्या तुम समझ नहीं रखते ?[3]

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦﴾

(१७) तो उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्यारोपण करे अथवा उसकी आयतों को मिथ्या कहे, निश्चय ऐसे अपराधी कभी सफल नहीं होंगे।

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾

(१८) तथा ये लोग अल्लाह को छोड़ कर[4] ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

---

[1]यह उस पर अधिक बल दिया गया है। मैं तो मात्र उसी का अनुयायी हूँ जो अल्लाह की ओर से मुझपर उतारा गया है। इसमें किसी प्रकार की कमी अथवा बढ़ोत्तरी मैं करूँगा तो उस महान दिन की यातना से मैं सुरक्षित नहीं रह सकता।

[2]अर्थात सम्पूर्ण मामला अल्लाह की इच्छा पर आधारित है, वह चाहता तो मैं पढ़कर नहीं सुनाता, न तुम्हें इसकी कोई सूचना होती। कुछ ने इसका अर्थ यह किया है कि मेरे मुख से वह तुम्हें इस क़ुरआन के विषय में कुछ नहीं बतलाता।

[3]तथा तुम भी जानते हो कि नबूअत की घोषणा से पूर्व तुम्हारे साथ चालीस वर्ष मैंने व्यतीत किये हैं। क्या मैंने किसी गुरू से कुछ सीखा ? इसी प्रकार तुम मेरे सच्चे होने तथा माल को सुरक्षित रखने वाला समझते रहे हो। क्या अब यह सम्भव है कि मैं अल्लाह पर झूठ गढ़ना प्रारम्भ कर दूँ ? इन दोनों बातों का यह अर्थ है कि यह क़ुरआन अल्लाह ही का उतारा हुआ है, न मैंने किसी से सुना अथवा सीख कर इसे वर्णन किया है तथा न यों ही झूठ इसे अल्लाह से सम्बन्धित कर दिया है।

[4]अर्थात अल्लाह की उपासना की सीमा पार करके न कि अल्लाह की इबादत को त्याग कर। क्योंकि मूर्तिपूजक अल्लाह की भी इबादत करते थे और अन्यों को भी।

مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾

हानि पहुँचा सकें तथा न उनको लाभ पहुँचा सकें [1] तथा कहते हैं कि ये अल्लाह के समक्ष हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं।[2] (आप) कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को ऐसे विषय की सूचना देते हो जिसे वह नहीं जानता आकाशों में तथा न धरती में।[3] वह पवित्र तथा सर्वश्रेष्ठ है उन लोगों के शिर्क (अनेकेश्वरवाद) से।[4]

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ

(१९) तथा सभी लोग एक ही उम्मत (समुदाय-धर्म) के थे, फिर उन्होंने मतभेद उत्पन्न किये [5] तथा यदि एक बात न होती जो आपके प्रभु

[1]जबकि पूजनीय की गरिमा यह होती है कि वह अपने आज्ञाकारियों को प्रतिफल तथा अवज्ञाकारियों को दण्ड देने में सामर्थ्य हो।

[2]अर्थात उनकी सिफ़ारिश से अल्लाह हमारी आवश्यकतायें पूरी कर देता है। हमारी बिगड़ी बना देता है अथवा हमारे शत्रु की बनी हुई को बिगाड़ देता है। अर्थात मूर्तिपूजक भी अल्लाह के अतिरिक्त जिनकी पूजा करते थे उनको लाभ-हानि में पूर्ण रूप से निश्चित नहीं समझते थे। बल्कि अपने तथा अल्लाह के मध्य माध्यम तथा सिफ़ारिश करने वाला समझते थे।

[3]अर्थात अल्लाह को तो इस बात का ज्ञान नहीं कि उसका कोई साझीदार भी है अथवा उसके दरबार में सिफ़ारिश करने वाले भी होगें ? इस प्रकार यह मूर्तिपूजक अल्लाह को सूचना देते हैं कि तुझे यदि सूचना नहीं परन्तु हम तुझे बताते हैं कि तेरे साझीदार भी हैं और सिफ़ारिश करने वाले भी हैं जो अपने श्रृद्धालुओं की सिफ़ारिश करेंगे।

[4]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मूर्तिपूजकों की यह बात निराधार है, अल्लाह तआला इन सभी बातों से पवित्र तथा श्रेष्ठ है।

[5]अर्थात यह शिर्क (अनेकेश्वरवाद) लोगों की अपनी उपज है। वरन् पहले इसका कोई स्तित्व नहीं था। सभी लोग एक ही धर्म तथा एक ही मार्ग पर थे जो इस्लाम है जिसमें एकेश्वरवाद को मूल स्थान प्राप्त है। आदरणीय नूह तक लोग इसी मार्ग एकेश्वरवाद पर चलते रहे। फिर उनमें मतभेद हो गया तथा कुछ लोगों ने अल्लाह के साथ अन्य को भी देवता, चिन्ताहारक तथा कष्टनिवारक समझना प्रारम्भ कर दिया।

की ओर से निर्धारित की जा चुकी है, तो जिस चीज़ में यह लोग मतभेद कर रहे हैं उनका पूर्ण रूप से निर्णय हो चुका होता।[1]

مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ⑲

(२०) तथा ये लोग यह कहते हैं कि उन पर कोई चमत्कार क्यों नहीं उतरा ?[2] (तो आप) कह दीजिए कि परोक्ष का ज्ञान मात्र अल्लाह को है,[3] तो तुम भी प्रतीक्षा में रहो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा में हूँ।

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ⑳

(२१) तथा जब हम लोगों को दुख पहुँचने के पश्चात सुख का स्वाद चखाते हैं,[4] तो वह तुरंत हमारी आयतों के विषय में धूर्तता करने

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ

---

[1]अर्थात यदि अल्लाह का यह निर्णय न होता कि सभी बातों के बताने से पूर्व किसी को यातना नहीं देना है, उसी प्रकार उसने सृष्टि के लिये भी एक निर्धारित समय का निर्धारण न किया होता तो निःसन्देह उनके मध्य मतभेद का निर्णय तथा ईमानवालों को आज्ञाकारी तथा काफ़िरों को यातना तथा कष्ट में लिप्त कर चुका होता।

[2]इससे तात्पर्य कोई बड़ा तथा खुला चमत्कार है। जैसे समूद के समुदाय के लिये ऊँटनी का प्रकट होना। उनके लिये सफ़ा पर्वत को स्वर्ण का अथवा मक्के के पर्वतों को समाप्त कर उनके स्थान पर नहरें तथा बाग़ बनाने का अथवा अन्य इस प्रकार का कोई चमत्कार प्रकट करके दिखाया जाये।

[3]अर्थात यदि अल्लाह तआला चाहे तो उनकी इच्छाओं के अनुसार चमत्कार प्रदर्शित कर सकता है। परन्तु उसके पश्चात भी यदि वे ईमान नहीं लाये तो फिर अल्लाह का नियम यह है कि ऐसे समुदाय को तुरन्त समाप्त कर देता है। इसलिये इस बात का ज्ञान केवल उसी को है कि किसी समुदाय के लिये उसकी इच्छाओं के अनुसार चमत्कार प्रदर्शन करना, उसके पक्ष में अच्छा है अथवा नहीं ? तथा उसी प्रकार इसका भी ज्ञान केवल उसी को है कि उनके इच्छित चमत्कार यदि उनको न दिखाये गये तो उन्हें कितना समय दिया जायेगा ? इसीलिये आगे कहा गया कि तुम भी प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ।

[4]दुख के पश्चात सुख का अर्थ है निर्धनता, सूखा तथा दुख एवं आपत्ति के पश्चात जीविका का बाहुल्य, जीवन हेतु सामग्री की अधिकता आदि।

فِيٓ ءَايَاتِنَا ۚ قُلِ ٱللَّهُ أَسۡرَعُ مَكۡرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكۡتُبُونَ مَا تَمۡكُرُونَ ﴿٢١﴾

लगते हैं।[1] (आप) कह दीजिए कि अल्लाह प्रयोजन में तुमसे अधिक तीव्र है।[2] नि:सन्देह हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे छलकपट को लिख रहे हैं।

هُوَ ٱلَّذِي يُسَيِّرُكُمۡ فِي ٱلۡبَرِّ وَٱلۡبَحۡرِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا كُنتُمۡ فِي ٱلۡفُلۡكِ وَجَرَيۡنَ بِهِم بِرِيحٖ طَيِّبَةٖ وَفَرِحُواْ بِهَا جَآءَتۡهَا رِيحٌ عَاصِفٞ وَجَآءَهُمُ ٱلۡمَوۡجُ مِن كُلِّ مَكَانٖ وَظَنُّوٓاْ أَنَّهُمۡ أُحِيطَ بِهِمۡ ۙ دَعَوُاْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ ۚ

(२२) वह (अल्लाह) ऐसा है जो तुम्हें जल तथा थल में यात्रा कराता है।[3] यहाँ तक कि जब तुम नाव में होते हो, तथा वे नवकाऐं लोगों को अनुकूल वायु के द्वारा लेकर चलती है तथा वे लोग उनसे प्रफुल्ल होते हैं, उन पर एक प्रचन्ड वायु का झोंका आता है तथा प्रत्येक ओर से लहरें उठती हैं तथा वे समझते हैं कि (बुरे) आ घिरे,[4] (उस समय)

---

[1]इसका अर्थ यह है कि वे हमारे इन प्रदानों का सम्मान तथा उनपर अल्लाह के कृतज्ञ नहीं होते अपितु कुफ़ तथा शिर्क करने लगते हैं अर्थात यह उनका वह बुरा उपाय है जिसे अल्लाह के प्रदानों की तुलना में अपनाते हैं।

[2]अर्थात अल्लाह का उपाय इससे कहीं अधिक तीव्र है, जो वे अपनाते हैं। तथा वह यह है कि वह उनको पकड़ने का सामर्थ्य रखता है, वह जब चाहे उन को पकड़ सकता है, तुरंत भी तथा उसका उपाय देर का हो तो बाद में भी। मकर مكر अरबी भाषा में उपाय तथा कूटनीति को कहते हैं, जो अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी। यहाँ अल्लाह के दण्ड तथा पकड़ को मकर مكر कहा गया है।

[3] يسيركم वह तुम्हें चलाता अथवा चलने-फिरने का सामर्थ्य प्रदान करता है। "थल में" अर्थात उसने तुम्हें पग दिया जिनसे तुम चलते हो, सवारियाँ उपलब्ध कीं, जिन पर सवार होकर दूर स्थान की यात्रा करते हो। तथा "जल में" अर्थात अल्लाह (तआला) ने तुम्हें नवकाऐं तथा पोत बनाने का गुण तथा समझ प्रदान किया, तुमने उन्हें निर्मित किया तथा उनके द्वारा समुद्र में दूर तक यात्रा करते हो।

[4] أحيط بهم का अर्थ है, जिस प्रकार से शत्रु किसी समुदाय अथवा नगर का घेरा अर्थात नाकेबन्दी कर लेता है तथा फिर वे शत्रु की दया तथा कृपा पर होते हैं, उसी प्रकार जब वे तीब्र वायु के थपेड़ों तथा भंवर में घिर जाते हैं तथा मृत्यु उनके समक्ष नृत्य कर रही होती है।

लَئِنْ أَنجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٢٢﴾

सभी शुद्ध विश्वास तथा आस्था के साथ अल्लाह ही को पुकारते हैं[1] कि यदि तू इससे बचा ले तो हम अवश्य (तेरे) कृतज्ञ बन जायेंगे।

---

[1]अर्थात फिर वे प्रार्थना में अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का सममिश्रण नहीं करते जिस प्रकार सामान्य अवस्था में करते हैं। सामान्य अवस्था में वे कहते हैं कि ये महात्मा भी अल्लाह के प्रिय भक्त हैं, इन्हें भी अल्लाह ने कुछ अधिकार दे रखा है तथा उन्हीं के द्वारा हम अल्लाह की निकटता प्राप्त करने की खोज में हैं। परन्तु जब इस प्रकार की कठिनाईयों में घिर जाते हैं, तो सभी राक्षसी तक भूल जाते हैं तथा केवल अल्लाह ही याद रह जाता है तथा फिर उसी को पुकारते हैं। इससे एक बात विदित होती है कि मनुष्य की प्रकृति में एक अल्लाह की ओर आकर्षित होने की भावना रखी गयी है। मनुष्य समाज से प्रभावित होकर इस प्रकृति अथवा भावना को दबा देता है, परन्तु कष्ट के समय यह भावना उभर आती है तथा यह प्रकृति प्रकट होती है जिससे ज्ञात हुआ कि एकेश्वरवाद मनुष्य की अन्तरात्मा की पुकार है तथा मूल वस्तु है, जिससे मनुष्य को मुख नहीं मोड़ना चाहिए। क्योंकि इससे मुख मोड़ना प्रकृति से मुँह मोड़ना है जो स्पष्टतया भटकाव है। दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि मूर्तिपूजक जब इस प्रकार के कष्ट में घिर जाते तो अपने स्वीकृत देवताओं के बजाय केवल एक अल्लाह को पुकारते थे। अत: आदरणीय इकरमा बिन अबी जहल के विषय में आता है कि जब मक्का विजय हुआ तो ये वहाँ से भाग गये। बाहर किसी स्थान पर नाव पर सवार हुए, तो नाव तूफ़ान के घेरे में आ गयी, जिस पर मल्लाह ने नाव में सवार लोगों से कहा कि आज एक अल्लाह से प्रार्थना करो, तुम्हें उसके अतिरिक्त इस तूफ़ान से कोई मुक्ति दिलाने वाला नहीं। आदरणीय इकरमा कहते हैं कि मैंने सोचा यदि समुद्र में मुक्ति दिलाने वाला एक अल्लाह ही है, तो धरती में भी मुक्ति दिलाने वाला अवश्य ही वही है। तथा यही बात मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कहते हैं। अत: उन्होंने निर्णय कर लिया यदि मैं यहाँ से जीवित बच गया तो मक्का वापस जाकर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लूँगा। अत: ये नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा मुसलमान हो गये رضي الله عنه (सुनन नसाई, अबू दाऊद संख्या २६८३, तथा अलबानी के वर्णनानुसार 'सहीह' संख्या १७२३) परन्तु दुर्भाग्य से मुसलमानों में जनता इस प्रकार के शिर्क में फंसी हुई है कि संकट के समय में भी अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को पुकारती है। मरे हुए महात्माओं को संकटहारी समझती है तथा उन्ही को सहायता के लिए पुकारती है। अफ़सोस ! فإنا لله و إنا إليه راجعون

(२३) फिर जब अल्लाह (तआला) उनको बचा लेता है, तो तुरंत ही वह धरती में अनर्थ उपद्रव करने लगते हैं ।[1] हे लोगो ! यह तुम्हारी उदण्डता तुम्हारे लिए दुखदायी होने वाली है,[2] सांसारिक जीवन के (कुछ) लाभ हैं, फिर तुमको हमारे पास आना है । फिर हम सब तुम्हारा किया हुआ तुम को बता देंगे ।

فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ يٰٓاَيُّھَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓي اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾

(२४) सांसारिक जीवन की दशा ऐसी है, जैसे हमने आकाश से पानी बरसाया, फिर उस से धरती की वनस्पति जिनको मनुष्य तथा पशु खाते हैं, खूब हरी-भरी होकर निकली । यहाँ तक जब वह धरती अपनी शोभा का पूरा भाग ले चुकी तथा उसका अत्यन्त सौन्दर्य हो गया तथा उसके मालिकों ने समझा कि अब हम इस पर पूर्ण रूपेण अधिकारी हो चुके तो दिन में अथवा रात में उस पर हमारी ओर से कोई आदेश (दुर्घटना) आ गया, तो हमने उसको ऐसा साफ़ कर दिया [3] कि जैसे कल

اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَاۗءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَاۗءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ۭ حَتّٰٓي اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ

---

[1]यह मनुष्य की उसी कृतघ्नता के व्यवहार का वर्णन है, जिसका वर्णन अभी आयत संख्या १२ में गुजर चुका है तथा क़ुरआन में भी अन्य विभिन्न स्थानों पर अल्लाह ने इसका वर्णन किया है ।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम यह कृतघ्नता तथा उदण्डता कर लो चार दिन के जीवन का आन्नद लेकर । अन्तत: तुम्हें हमारे ही पास आना है, फिर हम तुम्हें, जो कुछ तुम करते रहे होगे बतायेंगे अर्थात उसका दण्ड देंगे ।

[3] حَصِيدًا का अर्थ है مَحصُودًا अर्थात ऐसी खेती जिसे काटकर एक ओर रख दिया गया हो तथा खेत साफ हो गया हो । सांसारिक जीवन को इस प्रकार खेती से उपमा देकर इसके अस्थायित्व तथा सामयिकता को प्रदर्शित किया गया है कि खेती भी वर्षा के पानी से फलती-फूलती है तथा बढ़ती है । परन्तु उसे भी काटकर विनाश के घाट उतार दिया जाता है ।

لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

यहाँ थी ही नहीं। हम इसी प्रकार निशानियों का सविस्तार वर्णन करते हैं ऐसे लोगों के लिए जो विचार करते हैं।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ۭ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा अल्लाह (तआला) शान्त स्थान की ओर तुम को बुलाता है तथा जिसको चाहता है संमार्ग दर्शाता है।

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ۭ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَھُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ ھُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) जिन लोगों ने पुण्य किया है उनके लिए भलाई है तथा कुछ अधिक भी[1] तथा उनके मुख पर न कालिमा छायेगी तथा न अपमान, ये लोग स्वर्ग में रहने वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَاۗءُ سَيِّئَةٍۢ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُھُمْ ذِلَّةٌ ۭ مَا لَھُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ

(२७) तथा जिन लोगों ने बुरे कर्म किये उनको बुराई का दण्ड समान मिलेगा[2] तथा उन पर अपमान छा जायेगा, उनको अल्लाह (तआला) से कोई बचा न पायेगा।[3] जैसे कि उनके मुख

---

[1] زيادة का कई अर्थ लिया गया है, परन्तु हदीस में इसकी व्याख्या अल्लाह के दर्शन से की गयी है, जो स्वर्ग वालों को स्वर्ग तथा स्वर्ग के सुख प्रदान के पश्चात प्रदान किया जायेगा। (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान बाब इस्बाते रूयतिल मोमिनीन फ़िल आख़िरते लेरब्बेहिम)

[2] पूर्व की आयत में स्वर्ग में निवास करने वाले लोगों का वर्णन था, उसमें बताया गया था कि उन्हें इन पुण्य कार्यों का बदला कई-कई गुना मिलेगा तथा फिर इससे अधिक अल्लाह के दर्शन से सम्मानित होंगे। इस आयत में बताया जा रहा है कि बुराई का बदला बुराई के बराबर ही मिलेगा। سيّئات का तात्पर्य कुफ़्र (अर्धम) तथा शिर्क तथा अन्य बुराईयाँ हैं।

[3] जिस प्रकार ईमान वालों को बचाने वाला अल्लाह तआला होगा, वह उस दिन उन्हें अपनी विशेष कृपा प्रदान करेगा, इसके अतिरिक्त उनके लिये अल्लाह तआला अपने विशेष भक्तों को सिफ़ारिश की आज्ञा प्रदान करेगा, जिनकी सिफ़ारिश वह स्वीकार करेगा।

أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ۚ أُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٢٧﴾

पर अंधेरी रात के पर्त लपेट दिये गये हैं ।[1] ये लोग नरक में रहने वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे ।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ ۖ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُم مَّا كُنتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा वह दिन भी स्मरणीय है, जिस दिन हम उन सभी को एकत्रित करेंगे ।[2] फिर मूर्तिपूजकों से कहेंगे कि तुम तथा तुम्हारे साझीदार अपने स्थान पर ठहरो ।[3] फिर हम उनमें आपस में फूट डाल देंगे,[4] तथा उनके

---

[1]यह अतिश्योक्ति है कि उनके मुख इतने काले होंगे । इसके विपरीत ईमानवालों के मुख कोमल तथा प्रकाश युक्त होंगे । जिस प्रकार सूरः *आले इमरान* आयत संख्या १०६ में है ﴿يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ﴾ तथा (सूरः *अबस*, ३८-४१) तथा सूरः *कियामः* में है ।

[2] جميعا से तात्पर्य आदि से अन्त तक के सभी धरती वासी मनुष्य तथा जिन्नात हैं, सबको अल्लाह तआला एकत्र करेगा । जिस प्रकार कि अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَحَشَرْنَٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا﴾

"हम उन सभी को एकत्रित करेंगे, किसी एक को भी न छोड़ेंगे ।"(सूरः *कहफ़*, ४७)

[3]उनकी अपेक्षा ईमानवालों को दूसरी ओर कर दिया जायेगा । अर्थात ईमानवालों तथा शिर्क एवं कुफ्र करने वालों को पृथक-पृथक एक-दूसरे से अलग कर दिया जायेगा । जैसे फ़रमाया :

﴿وَامْتَٰزُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ﴾

"ऐ अपराधियो ! आज तुम (एक-दूसरे से) अलग हो जाओ ।" (सूरः *यासीन*, ५९)

﴿يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ﴾

"उस दिन लोग गुटों में बट जायेंगे ।" (सूरः *रोम*, ४३)

अर्थात दो गुटों में । أي يصيرون صدعين (इब्ने कसीर)

[4]अर्थात संसार में उनका आपस में जो विशेष सम्बन्ध था, वह समाप्त कर दिया जायेगा तथा वे एक-दूसरे के शत्रु बन जायेंगे तथा उनके देवता इस बात ही को नकार देंगे कि ये लोग उनकी पूजा किया करते थे, उनको सहायता के लिये पुकारते थे, उनके नाम का प्रसाद-भोग लगाते थे ।

वे साझीदार कहेंगे कि तुम हमारी इबादत (पूजा) नहीं करते थे।

فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) तो हमारे तुम्हारे मध्य अल्लाह पर्याप्त है गवाह के रूप में कि हमको तुम्हारी इबादत की सूचना भी न थी।[1]

هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾

(३०) उस स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्व किये गये कार्यों का परीक्षण कर लेगा,[2] तथा ये लोग अल्लाह की ओर जो उनका वास्तविक मालिक है, लौटाये जायेंगे तथा जो कुछ झूठ (ईष्टदेव) बना रखे थे, सभी उन से खो जायेंगे।[3]

---

[1]यह अस्वीकार का कारण है कि हमें तो कुछ पता ही नहीं, तुम क्या कुछ किया करते थे तथा हम झूठ बोल रहे हों तो हमारे मध्य अल्लाह तआला गवाह है तथा वह पर्याप्त है, उस की गवाही के पश्चात किसी अन्य साक्षी की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाती। यह आयत इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मूर्तिपूजक जिनको सहायता के लिये पुकारते थे, वह मात्र पत्थर की मूर्तियाँ नहीं थीं (ज़िस प्रकार आजकल क़ब्रपूजक अपनी क़ब्रपूजा को उचित सिद्ध करने के लिए कहते हैं कि इस प्रकार की आयतें तो मूर्तियों के लिये हैं) अपितु वह बुद्धि तथा ज्ञान रखने वाले लोग ही होते थे जिनके मरने के पश्चात लोग उनकी मूर्तियाँ बनाकर पूजना प्रारम्भ कर देते थे। जिस प्रकार आदरणीय नूह के समुदाय के कर्मों से भी सिद्ध होता है जिसका विस्तृत वर्णन सहीह बुख़ारी में लिखा है। दूसरे यह भी ज्ञात हुआ कि मरने के पश्चात मनुष्य कितना भी बड़ा महात्मा क्यों न हों, यहाँ तक कि नबी तथा रसूल हो। उसे दुनिया की स्थिति का ज्ञान नहीं होता, उसके अनुयायी तथा श्रद्धालु उसे सहायता के लिये पुकारते हैं, उसके नाम का प्रसाद-भोग चढ़ाते हैं, उसकी क़ब्र पर मेले-ठेले का आयोजन होता है, परन्तु वह अंजान होता है तथा इन सभी बातों का इंकार ऐसे लोग क़ियामत (प्रलय) वाले दिन करेंगे। यही बात सूरः *अहक़ाफ़* आयत संख्या ५ तथा ६ में वर्णित की गयी है।

[2]अथवा स्वाद चख लेगा।

[3]अर्थात कोई देवता तथा कष्टनिवारक वहाँ काम नहीं आयेगा। कोई किसी की कठिनाई दूर करने का सामर्थ्य न रखेगा।

(३१) (आप) कहिए कि वह कौन है, जो तुमको आकाश तथा धरती से जीविका पहुँचाता है अथवा वह कौन है जो कानों तथा आँखों पर पूर्ण अधिकार रखता है तथा वह कौन है जो जीवधारी को निर्जीव से निकालता है तथा निर्जीव से सजीव को निकालता है तथा वह कौन है जो सभी कार्यों का संचालन करता है ? अवश्य वह यही कहेंगे कि अल्लाह ।[1] तो उनसे कहिए कि फिर डरते क्यों नहीं ?

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ۭ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝

(३२) तो यह है अल्लाह (तआला) जो तुम्हारा सत्य प्रभु है । फिर सत्य के पश्चात अन्य क्या रह गया सिवाय भटकावे के, फिर कहाँ भटके जाते हो ?[2]

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ښ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝

(३३) इसी प्रकार आप के प्रभु की यह बात कि यह ईमान न लायेंगे, सभी अवज्ञाकारी लोगों के विषय में में सिद्ध हो चुकी है ।[3]

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

---

[1]इस आयत से भी स्पष्ट होता है कि मूर्तिपूजक अल्लाह के प्रभुत्व, सृजन, स्वामित्व तथा उसको प्रत्येक कार्य का हल करने वाला स्वीकार करते थे । परन्तु उसके उपरान्त चूँकि वह उसकी उपासना में दूसरों को साझीदार ठहराते थे, इसीलिये अल्लाह ने उन्हें नरक का ईंधन बताया । आजकल के ईमान के दावेदार भी इसी उपासना-एकेश्वरवाद के इंकार करने वाले हैं ।

[2]अर्थात पोषक तथा पूज्य तो यही है, जिसके सम्बन्ध में तुम्हें स्वयं स्वीकार है कि प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा तथा स्वामी एवं संयोजक वही है । फिर इस इबादत के योग्य को छोड़कर जो तुम अन्य को देवता बनाये फिरते हो वह भटकावे के अतिरिक्त क्या है तुम्हारी समझ में यह बात क्यों नही आती ? तुम कहाँ फिरे जाते हो ?

[3]अर्थात जिस प्रकार मूर्तिपूजक सारी बातों को स्वीकार कर लेने के उपरान्त अपनी मूर्तिपूजा पर स्थिर हैं तथा उसे त्यागने के लिये तैयार नहीं, इसी प्रकार तेरे प्रभु की यह बात सिद्ध हो गयी कि यह ईमान नहीं लाने वाले हैं । क्योंकि यह दोषपूर्ण मार्ग

قُلْ هَلْ مِن شُرَكَآئِكُم مَّن يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ ۚ قُلِ اللَّهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) (आप इस प्रकार) कहिए कि क्या तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है जो प्रथम बार भी पैदा करे फिर पुन: पैदा करे ? (आप) कह दीजिए कि अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है फिर वही पुन: भी पैदा करेगा । फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो ?[1]

قُلْ هَلْ مِن شُرَكَآئِكُم مَّن يَهْدِىٓ إِلَى الْحَقِّ ۚ قُلِ اللَّهُ يَهْدِى لِلْحَقِّ ۗ أَفَمَن يَهْدِىٓ إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَن يُتَّبَعَ أَمَّن لَّا يَهِدِّىٓ إِلَّآ أَن يُهْدَىٰ ۖ فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) (आप) कहिए कि तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है कि सत्य का मार्ग बताता हो ? (आप) कह दीजिए कि अल्लाह ही सत्य का मार्ग बताता है ।[2] तो फिर जो शक्ति सत्य बात का मार्ग बतलाती हो, वह अधिक अनुसरण एवं पालन के योग्य है अथवा वह व्यक्ति जिसको बिना बताये स्वयं ही मार्ग न

छोड़कर सत्य मार्ग पर चलने के लिये तैयार नहीं हैं, तो मार्गदर्शन तथा ईमान उन्हें किस प्रकार प्राप्त हो सकता है ? यह वही बात है जिसे अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है ।

﴿ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَٰفِرِينَ ﴾

"परन्तु प्रकोप की बात काफ़िरों पर सिद्ध हो गयी ।"(सूर: अज़्ज़ुमर,७१)

[1]मूर्तिपूजकों के मूर्तिपूजन के खोखलापन को स्पष्ट करने के लिये उनसे पूछा जा रहा है कि बताओ जिन्हें तुम अल्लाह का साझीदार बताते हो, क्या उन्होंने इस सृष्टि को प्रथम बार पैदा किया है ? अथवा पुन: उसे पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं ? नहीं, नि:सन्देह नहीं, प्रथम बार पैदा करने वाला भी अल्लाह ही है तथा पुन: दोबारा वही क़ियामत (प्रलय) के दिन सभी को जीवित करेगा, तो तुम प्रकाश का मार्ग छोड़कर कहाँ फिरे जा रहे हो ?

[2]अर्थात भटके हुए यात्रियों का मार्ग बताने वाला तथा दिलों को भटकावे से सत्य की ओर फेरनेवाला भी अल्लाह तआला ही है । उनके साझीदारों में कोई ऐसा नहीं जो इस कार्य को कर सके ।

दिखायी दे ?[1] तो तुम को क्या हो गया है, तुम कैसे निर्णय करते हो ?[2]

(३६) तथा उनमें से अधिकतर लोग निराधार (अनुमानित) विचारों पर चल रहे हैं। निःसन्देह निर्मूल (अनुमानित) विचार सत्य (की पहचान) में तनिक भी काम नहीं दे सकता।[3] ये जो कुछ कर रहे हैं निःसन्देह अल्लाह सब कुछ जानता है।[4]

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا ۚ إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝

(३७) तथा यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह (की प्रकाशना) के सिवाय (स्वयं ही) गढ़ लिया गया हो, अपितु यह तो (उन किताबों) की प्रमाण पुस्तक है, जो इसके पूर्व

وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ

---

[1]फिर अनुसरण योग्य कौन है? वह व्यक्ति जो देखता, सुनता तथा लोगों को सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है? अथवा जो अंधा तथा बहरा होने के कारण स्वयं मार्ग पर चल भी नहीं सकता, जब तक कि अन्य लोग उसे मार्ग पर न डाल दें अथवा हाथ पकड़कर न ले जायें ?

[2]अर्थात तुम्हारी बुद्धि को क्या हो गया है ? तुम किस प्रकार अल्लाह तथा उसकी सृष्टि को उसके समान ठहरा रहे हो ? तथा अल्लाह के साथ अन्यों को भी इबादत में साझीदार बना रहे हो ? जबकि इन प्रमाणों की माँग है कि केवल इसी एक अल्लाह को इबादत (आराधना) के योग्य माना जाये तथा सभी प्रकार की इबादतें उसी के लिए विशेष रूप से मानी जायें।

[3]परन्तु बात यह है कि लोग निराधार बातों पर चलने वाले हैं, यद्यपि जानते हैं कि प्रमाणों के सापेक्ष अन्ध विश्वास, अनूमान तथा कल्पना एवं विचार का कोई महत्व नहीं, क़ुरआन में ظن विश्वास तथा अनूमान दोनों अर्थों में प्रयोग हुआ है। यहाँ दूसरा अर्थ लिया गया है।

[4]अर्थात इस हटधर्मी का दण्ड वह देगा कि प्रमाण न रखने के उपरान्त यह मात्र अंधविश्वास तथा कुविचारों के पीछे लगे रहे तथा बुद्धि एवं समझ से तनिक काम नहीं लिया।

لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾

(उतर) चुकी है,[1] तथा पुस्तक (आवश्यक नियमों) का विस्तृत वर्णन है।[2] इसमें कोई बात सन्देह[3] की नहीं कि अखिल जगत के प्रभु की ओर से है।[4]

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾

(३८) क्या यह लोग इस प्रकार कहते हैं कि आपने उसको गढ़ लिया है ? (आप) कह दीजिए कि तो फिर तुम इसके समान एक ही सूर: लाओ तथा अल्लाह के अतिरिक्त जिन-जिन को बुला सको उनको बुला लो यदि तुम सत्यवादी हो।[5]

---

[1]जो इस बात का प्रमाण है कि क़ुरआन गढ़ा हुआ नहीं है, बल्कि उस शक्ति का उतारा हुआ है जिसने पूर्व की किताबें भी उतारीं।

[2]अर्थात हराम एवं हलाल तथा उचित एवं अनुचित का विस्तृत वर्णन करने वाला।

[3]उसकी शिक्षाओं में, उसकी वर्णित कथाओं तथा घटनाओं में तथा भविष्य में होने वाली घटनाओं के विषय में।

[4]यह सब बातें स्पष्ट करती हैं कि ये अखिल जगत के प्रभु ही की ओर से उतारी गयी है जो "भूत का ज्ञाता" भी है तथा "भविष्य का ज्ञाता" भी।

[5]इन सभी यर्थाथ तथा प्रमाण के उपरान्त भी यदि तुम्हारा यही दावा है कि यह क़ुरआन मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का गढ़ा हुआ है, तो वह भी तुम्हारी ही तरह का एक मनुष्य है, तुम्हारी भाषा भी उसकी ही तरह अरबी है। वह तो एक है, तुम यदि अपने दावे में सच्चे हो तो तुम संसार भर के साहित्यकारों, ज्ञानियों, वाक पटुता में दक्ष तथा वैज्ञानिकों एवं लेखकों को एकत्र कर लो तथा इस क़ुरआन की एक छोटी सी छोटी सूर: के समान प्रस्तुत कर दो। क़ुरआन करीम का यह चैलेंज आज तक उत्तर न पा सका, जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यह क़ुरआन किसी व्यक्ति का कल्पित तथा बनाया हुआ नहीं है, बल्कि वास्तव में अल्लाह का कथन है जो परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरा है।

(३९) अपितु वे ऐसी चीज़ को झुठलाने लगे जिसको अपने ज्ञान की परिधि में नहीं लाये[1] तथा अभी उनको इसका अन्तिम परिणाम नहीं मिला ।[2] जो लोग उनसे पूर्व हुए हैं उसी प्रकार उन्होंने भी झुठलाया था, तो देख लीजिए कि उन अत्याचारियों का अन्त कैसा हुआ ?[3]

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٣٩﴾

(४०) तथा उनमें से कुछ ऐसे हैं जो इस पर ईमान ले आयेंगे तथा कुछ ऐसे हैं कि उस पर ईमान न लायेंगे । तथा आप का प्रभु भ्रष्टाचारियों को भलि-भाँति जानता है ।[4]

وَمِنْهُم مَّن يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُم مَّن لَّا يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٤٠﴾

---

[1]अर्थात क़ुरआन में चिन्तन तथा उसके अर्थों पर विचार किये बिना, उसको झुठलाने पर तुल गये ।

[2]अर्थात क़ुरआन ने जो पूर्व की घटनायें तथा भविष्य की संभावनाओं का वर्णन किया है उसकी पूर्ण सत्यता एवं वास्तविकता भी उन पर स्पष्ट नहीं हुई, उसके बिना ही झुठलाना प्रारम्भ कर दिया अथवा दूसरा भावार्थ यह है कि उन्होंने क़ुरआन पर उचित चिन्तन किये बिना ही उसे झुठलाया, यद्यपि वह सहीह अर्थों में उस पर प्रयत्न करते तथा उन बातों पर विचार करते जो इसके अल्लाह के कथन होनें का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, तो निस्सन्देह उसकी समझ तथा अर्थ के द्वार उनके लिये खुल जाते इस अवस्था में تَأْوِيل का अर्थ, क़ुरआन करीम की प्रस्तुति एवं रहस्य तथा मार्मिकता एवं अर्थ के स्पष्ट हो जाने के होंगे ।

[3]ये उन काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों को चेतावनी देकर सावधान किया जा रहा है कि तुमसे पूर्व के समुदायों ने भी अल्लाह की आयतों को झुठलाया तो देख लो उनका क्या परिणाम हुआ ? यदि तुम इसे झुठलाने से न रूके तो तुम्हारा भी परिणाम इससे भिन्न न होगा ।

[4]वह भली-भाँति जानता है कि मार्गदर्शन का अधिकारी कौन है, उसे मार्गदर्शन प्रदान कर देता है, तथा भटकावे का कौन अधिकारी है, उसके लिये भटकावे का द्वार पूर्णरूप से खोल देता है । वह न्याय करने वाला है, उसके किसी कार्य में लेशमात्र भी अत्याचार

وَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل لِّي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ أَنتُم بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٤١﴾

(४१) तथा यदि वे आप को झुठलाते रहें तो यह कह दीजिए कि मेरा किया हुआ मुझको मिलेगा तथा तुम्हारा किया हुआ तुमको मिलेगा। तुम मेरे किये हुए के उत्तरदायी नहीं हो और मैं तुम्हारे किये हुए का उत्तरदायी नहीं हूँ।[1]

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा उनमें कुछ ऐसे हैं जो आपकी ओर कान लगा कर सुनते हैं। क्या आप बहरों को सुनाते हैं चाहे उनको बुद्धि भी न हो ?[2]

وَمِنْهُم مَّن يَنظُرُ إِلَيْكَ أَفَأَنتَ

(४३) तथा उनमें कुछ ऐसे हैं कि आपको देख रहे हैं। फिर क्या आप अंधों को मार्ग

नहीं। जोजिस बात के योग्य होता है, उसके अनुसार वह वस्तु उसको प्रदान कर देता है।

[1]अर्थात हर प्रकार के समझाने तथा प्रमाण प्रस्तुत करने के पश्चात भी यदि वह झुठलाना न बन्द करे, तो फिर आप यह कह दें, अर्थ यह है कि मेरा कार्य मात्र आमन्त्रण देना तथा सचेत करना है, तो वह मैं कर चुका हूँ। अब न तुम मेरे कर्मों के उत्तरदायी हो, न मैं तुम्हारे कर्मों का, सबको अल्लाह के दरबार में प्रस्तुत होना है, वहाँ प्रत्येक व्यक्ति से उसके अच्छे तथा बुरे कर्मों की पूछताछ होगी। यह वही बात है जो ﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ * لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ﴾ में है तथा आदरणीय इब्राहीम ने इन शब्दों में कही थी।

﴿إِنَّا بُرَآءُ مِنكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ﴾

"नि:सन्देह हम तुमसे अलग हैं तथा जिसकी तुम अल्लाह के अतिरिक्त पूजा करते हो उनसे, हम तुम्हारे (मत) को नकारने वाले हैं।" (सूरः *अल-मुमतहेनः*, ४)

[2]अर्थात देखावे के लिये कुरआन तो सुनते हैं, परन्तु सुनने का अर्थ मार्ग-प्रदर्शन प्राप्त करना नहीं, इसलिये उसी प्रकार कोई लाभ नहीं होता, जिस प्रकार एक बहरे को लाभ नहीं होता। विशेष रूप से जब बहरा बुद्धि न रखता हो। क्योंकि बुद्धिमान बहरा फिर भी संकेत से कुछ समझ लेता है परन्तु उस की तुलना अबोध बहरे के समान है जो बिल्कुल ही बहरा है।

تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ﴿٤٣﴾

दिखाना चाहते हैं चाहे उनकी दृष्टि भी न हो ?[1]

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَٰكِنَّ النَّاسَ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٤﴾

(४४) यह विश्वस्त बात है कि अल्लाह लोगों पर तनिक भी अत्याचार नहीं करता परन्तु लोग स्वयं ही अपने आप पर अत्याचार करते हैं ।[2]

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۚ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा उनको वह दिन याद दिलाइए जिसमें अल्लाह उनको (अपनी सेवा में) इस अवस्था में एकत्रित करेगा (कि उन्हें लगेगा) कि (संसार में) सारे दिन का एक आध क्षण रहे हों[3] तथा आपस में एक-दूसरे को पहचाननें को खड़े

---

[1]इसी प्रकार कुछ लोग आप की ओर देखते हैं, परन्तु उद्देश्य उनका भी चूँकि कुछ और होता है, इसलिये उन्हें भी उसी प्रकार कोई लाभ नहीं होता, जिस प्रकार से एक अंधे को नहीं होता । विशेष रूप से वह अंधा जो दृष्टि के साथ-साथ समझ से भी वंचित हो। क्योंकि कुछ अंधे हृदय की दृष्टि रखते हैं, वह आँखों की ज्योति से वंचित होने के उपरान्त, बहुत कुछ समझ लेते हैं। परन्तु उनकी तुलना ऐसे ही है, जैसे कोई अंधा हो जो हृदय की दृष्टि ज्योति से भी वंचित हो। उद्देश्य इन सब बातों के द्वारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सांत्वना है। जिस प्रकार एक वैद्य तथा चिकित्सक को जब यह ज्ञात हो जाये कि रोगी उपचार कराने के लिये तैयार नहीं है तथा वह मेरे निर्देश तथा चिकित्सा की चिन्ता नहीं करता तो वह उसे अनदेखी कर देता है तथा वह उस पर अपना समय नष्ट करना नहीं चाहता।

[2]अर्थात अल्लाह तआला ने उन्हें सारी चीज़ें प्रदान की हैं, आँखें भी दी हैं जिनसे देख सकते हैं, कान दिये हैं जिससे सुन सकते है, बुद्धि तथा समझ दी है जिनसे सत्य तथा असत्य एवं झूठ तथा सच मे मध्य अंतर कर सकते हैं। परन्तु इन शक्तियों का यदि उचित प्रयोग करके सत्य का मार्ग नहीं अपनाते तो फिर ये स्वयं ही अपने आप पर अत्याचार कर रहे हैं। अल्लाह तआला ने उन पर कोई अत्याचार नहीं किया।

[3]अर्थात प्रलय की कठिनाईयाँ देखकर संसार के सारे स्वाद भूल जायेंगे तथा संसार का जीवन उन्हें ऐसा प्रतीत होगा कि जैसे कि वे दुनिया में एक-आध क्षण ही रहे हैं।

हों ।[1] वास्तव में हानि में पड़े वह लोग जिन्होंने अल्लाह के पास जाने को झुठलाया तथा वे मार्गदर्शन पाने वाले नहीं थे ।

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा हम जिसका उनसे वादा कर रहे हैं उसमें से कुछ तनिक सा आपको दिखला दें अथवा (उनके प्रकट होने से पूर्व) हम आप को मौत दे दें, तो हमारे पास तो उनको आना ही है । फिर अल्लाह उनके सभी कर्मों का साक्षी है ।[2]

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ فَإِذَا جَاءَ

(४७) तथा प्रत्येक समुदाय के लिए एक रसूल (संदेशवाहक) है, फिर जब उनका रसूल

---

[1]प्रलय में विभिन्न अवस्थायें होंगी, जिन्हें क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है । एक समय ऐसा होगा कि एक-दूसरे को पहचानेंगे, कुछ अवसर ऐसे आयेंगे कि आपस में एक-दूसरे पर भटकावे का दोषारोपण करेंगे । कुछ अवसरों पर ऐसा भयभीत होंगे कि

﴿فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ﴾

"आपस में एक दूसरे के सम्बन्धों का न पता होगा तथा न एक-दूसरे को पूछेंगे ।" (*सूरः अल-मोमिनून, १०१*)

[2]इस आयत में अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि हम उन काफ़िरों के विषय में जो वायदा कर रहे हैं यदि उन्होंने कुफ़्र (अधर्म) तथा मूर्तिपूजा को प्रचलित रखा तो उन पर भी उसी प्रकार अल्लाह का प्रकोप आ सकता है, जिस प्रकार से पूर्व के समुदायों पर आया, इनमें से कुछ यदि आप के जीवन में भेज दें तो यह भी सम्भव है, जिससे आपकी आँखे ठंडी होंगी । परन्तु यदि आप इससे पूर्व ही संसार से उठा लिये गये, तब भी कोई बात नहीं, इन काफ़िरों को अन्त में हमारे पास ही आना है । इनके सारे कर्मों तथा हाल की हमें सूचना है वहाँ ये हमारी यातनाओं से किस प्रकार बच सकेंगे ? अर्थात संसार में सम्भव है कि हमारे विशेष रहस्य के कारण यातना से बच जायें, परन्तु आख़िरत में तो उनके लिये हमारी यातनाओं से बचना सम्भव नहीं होगा क्योंकि प्रलय आने का उद्देश्य ही यही है कि वहाँ आज्ञापालकों को उनके आज्ञापालन का फल तथा अवहेलना करने वालों को उनकी अवज्ञा का दण्ड दिया जाये ।

رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

आ चुकता है उनका निर्णय न्याय के साथ किया जाता है ।[1] तथा उस पर अत्याचार नहीं किया जाता ।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा यह लोग कहते हैं कि यह वचन कब होगा यदि तुम सच्चे हो ?

قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ

(४९) (आप) कह दीजिए कि मैं स्वयं अपने लिए तो किसी लाभ तथा किसी हानि का अधिकार रखता ही नहीं परन्तु जितना अल्लाह की इच्छा हो । प्रत्येक समुदाय के लिए एक निर्धारित समय है । जब उनका वह निर्धारित

---

[1]इसका एक अर्थ तो यह है कि प्रत्येक समुदाय में हम रसूल भेजते रहे । तथा जब रसूल अपना सचेत करने तथा संदेश पहुँचाने का कर्तव्य पूर्ण कर देता तो फिर हम उनके मध्य न्याय के साथ निर्णय कर देते । अर्थात पैग़म्बर तथा उन पर ईमान ले आने वालों को बचा लेते तथा दूसरों को नष्ट कर देते । क्योंकि :

﴿وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا﴾

"तथा हमारी रीति नहीं कि संदेशवाहक भेजने के पूर्व ही दण्ड देने लगें ।" (सूरः *बनी इस्राईल*, १५)

तथा इस निर्णय में उन पर कोई अत्याचार नहीं होता था । क्योंकि अत्याचार तो तब होता जब बिना पाप के उन पर प्रकोप भेज दिया जाता अथवा बिना सर्तक किये उन्हें घेर लिया जाता । (फ़तहुल कदीर) दूसरा भावार्थ यह वर्णन किया गया है कि इसका सम्वन्ध क़ियामत (प्रलय) से है अर्थात क़ियामत के दिन सभी समुदाय जब अल्लाह के दरवार में प्रस्तुत होंगे, तो उस समुदाय में भेजा गया रसूल भी साथ होगा । सभी के कर्मपत्र भी होंगे तथा फ़रिश्ते भी गवाह के रूप में प्रस्तुत होंगे । तथा इस प्रकार हर समुदाय तथा उसके रसूल के मध्य न्यायपूर्वक निर्णय किया जायेगा । तथा हदीस में आता है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समुदाय का निर्णय सर्वप्रथम होगा । जैसाकि फ़रमाया: "हम यद्यपि सबसे पश्चात आने वाले हैं परन्तु क़ियामत को सबसे आगे होंगे, तथा सम्पूर्ण सृष्टि से पूर्व हमारा निर्णय किया जायेगा ।" (सहीह मुस्लिम किताबुल जुमुअः बाब हिदायति हाज़ेहिल उम्मः ले यौमिल जुमुअः) (तफ़सीर इब्ने कसीर) ।

فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٤٩﴾

समय आ पहुँचता है, तो एक क्षण न पीछे हट सकते हैं तथा न आगे खिसक सकते हैं ।[1]

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَتَىٰكُمْ عَذَابُهُۥ بَيَٰتًا أَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ ٱلْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) (आप) कह दीजिए कि यह तो बताओ कि यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप रात को आ पड़े अथवा दिन को, तो प्रकोप में कौन सी ऐसी वस्तु है कि अपराधी लोग उसको शीघ्र माँग रहे हैं ।[2]

---

[1]यह मूर्तिपूजकों के अल्लाह के प्रकोप की माँग पर कहा जा रहा है कि मैं तो अपने स्वयं के लाभ-हानि का अधिकार नहीं रखता, तो क्योंकर मैं दूसरों को लाभ अथवा हानि पहुँचा सकूँ ? हाँ, यह सारा अधिकार अल्लाह ही के हाथ में है तथा वह अपनी इच्छानुसार ही किसी को लाभ अथवा हानि पहुँचाने का निर्णय करता है । इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने प्रत्येक समुदाय के लिये एक समय निर्धारित किया हुआ है, इस निर्धारित समय तक अवसर देता है । परन्तु जब वह समय आ जाता है तो फिर वह एक क्षण पीछे हो सकते हैं न आगे खिसक सकते हैं ।

टिप्पणी : यहाँ यह बात अति आवश्यक है कि जब सर्वोत्तम पुरुष रसूलों के प्रमुख मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक को किसी को लाभ-हानि पहुँचाने पर वश नहीं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात के लोगों में कौन-सा व्यक्ति ऐसा हो सकता है जो किसी की आवश्यकता की पूर्ति कर दे तथा कष्ट निवारण पर वश रखता हो ? इस प्रकार स्वयं अल्लाह के पैग़म्बर से सहायता माँगना, उनसे विनती करना "या रसूलुल्लाह अलमदद" तथा "أغثني يا رسول الله" आदि शब्द से पुकारना अथवा ध्यान लगाना किसी भी प्रकार उचित नहीं क्योंकि यह क़ुरआन की इस आयत तथा इसी प्रकार की अन्य स्पष्ट शिक्षाओं के विरूद्ध है बल्कि यह शिर्क की परिधि में आता है ।

[2]अर्थात प्रकोप तो अत्यन्त अप्रिय वस्तु है जिससे दिल घृणा करते हैं तथा इच्छायें अस्वीकार करती हैं, फिर यह उसमें क्या अच्छाई देखते हैं कि उसे शीघ्र लाने की माँग करते हैं ?

أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ آمَنتُم بِهِ ۚ آلْآنَ وَقَدْ كُنتُم بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥١﴾

(५१) क्या फिर जब वह आ ही पड़ेगा तब उस पर ईमान लाओगे, हाँ अब मान लिया[1] जब कि तुम उसकी शीघ्रता मचा रहे थे।

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾

(५२) फिर अत्याचारियों से कहा जायेगा कि अब स्थाई यातना का स्वाद चखो। तुमको तो तुम्हारे किये का ही बदला मिला है।

وَيَسْتَنبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٣﴾

(५३) तथा वे आप से पूछते हैं कि क्या वह (प्रकोप) वास्तविक बात है?[2] (आप) कह दीजिए कि हाँ, सौगन्ध है मेरे प्रभु की कि वह वास्तविक बात है तथा तुम अल्लाह को किसी प्रकार भी विवश नहीं कर सकते।

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ

(५४) तथा यदि प्रत्येक प्राण जिसने अत्याचार (मिश्रण) किया है, के पास इतना हो कि सम्पूर्ण धरती भर जाये तब भी उसको देकर अपना प्राण बचाने लगे।[3] तथा जब प्रकोप देख लेगें तो लज्जा को छिपाये रखेंगे तथा

[1]परन्तु प्रकोप आने के पश्चात मानने का क्या लाभ ?

[2]अर्थात यह पूछते हैं कि पुर्नजन्म, प्रलय तथा उनका फिर जीवित हो जाना सत्य है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ पैग़म्बर ! इनसे कह दीजिये कि तुम्हारा मिट्टी होकर मिट्टी में मिल जाना, अल्लाह तआला को पुन: जीवित करने से नहीं रोक सकता। इसलिये यह अवश्य होकर रहेगा। इमाम इब्नें कसीर फ़रमाते हैं कि इस आयत के संदर्भ में क़ुरआन में अन्य केवल दो आयतें हैं कि जिनमें अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर को आदेश दिया है कि वह सौगन्ध खाकर क़ियामत (प्रलय) के आने की घोषणा करें। एक सूर: सबा आयत संख्या ३ तथा दूसरी सूर: *तग़ाबुन* आयत संख्या ७

[3]अर्थात यदि संसार भर का कोष देकर यातना से मुक्त हो जायें तो देने के लिये तैयार होगा। परन्तु वहाँ किसी के पास होगा ही क्या ? अर्थात यातना से छुटकारा पाने का कोई मार्ग न होगा।

لَا يُظْلَمُونَ ۝٥٤

उनका निर्णय न्याय के साथ होगा। और उन पर अत्याचार न होगा।

أَلَآ إِنَّ لِلَّهِ مَا فِى السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَآ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝٥٥

(५५) याद रखो कि जितनी वस्तुऐं आकाशों तथा धरती में हैं, सभी अल्लाह के स्वामित्व में हैं। याद रखो कि अल्लाह का वादा सच्चा है परन्तु बहुत से लोग ज्ञान ही नहीं रखते।

هُوَ يُحْىِۦ وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝٥٦

(५६) वही प्राण डालता है वही प्राण निकालता है तथा तुम सब उसी के पास लाये जाओगे।[1]

يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُم مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا

(५७) हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की ओर से एक ऐसी वस्तु आयी है जो शिक्षाप्रद है।[2] तथा दिलों में जो (रोग) है उनके लिए

---

[1]इन आयतों में आकाश तथा धरती के मध्य प्रत्येक वस्तु पर अल्लाह तआला का स्वामित्व, अल्लाह के वायदे का सत्य होना, जीवन-मृत्यु पर उसका अधिकार तथा उसके दरबार में सब की उपस्थिति का वर्णन है, जिससे उद्देश्य पूर्व बातों की पुष्टि तथा सहमति है कि जो शक्ति इतने अधिकारों की मालिक है, उसकी पकड़ से बच निकलकर कोई कहाँ जा सकता है ? तथा उसने लेखा-जोखा के लिये जो दिन निर्धारित किया है, उसे कौन टाल सकता है ? नि:सन्देह अल्लाह का वायदा सत्य है, वह एक दिन अवश्य आयेगा तथा प्रत्येक अच्छे-बुरे को उसके कर्मों के अनुसार पुण्य तथा दण्ड दिया जायेगा।

[2]अर्थात जो क़ुरआन को दिल लगा कर पढ़े तथा उसके अर्थ तथा भाव पर विचार करे, उसके लिये क़ुरआन शिक्षा है। शिक्षा एवं उपदेश का मूल अर्थ है पूर्व तथा पश्चात के परिणाम को याद दिलाना, चाहे डराने के द्वारा हो अथवा प्रलोभन द्वारा। तथा वक्ता की तुलना चिकित्सक जैसी है जो रोगी को उन सब बातों से रोकता है जो उसके शरीर तथा स्वास्थ के लिये हानिकारक है। उसी प्रकार क़ुरआन भी प्रलोभन देकर तथा भय दिलाकर शिक्षा तथा उपदेश देता है तथा उन परिणामों से सावधान करता है जिनका अल्लाह की अवज्ञा की परिस्थिति में सामना करना होगा तथा उन कार्यों से रोकता है जिन से मनुष्य का परलोक का जीवन नष्ट हो सकता है।

निवारण है ।[1] तथा मार्गदर्शन करने वाला है तथा कृपा है ईमान वालों के लिए ।[2]

فِي الصُّدُورِ ۙ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

(५८) (आप) कह दीजिए कि बस लोगों को अल्लाह के उपहार तथा कृपा पर प्रसन्न होना चाहिए ।[3] वह उससे कहीं अधिक श्रेष्ठ है जिसको वह एकत्रित कर रहे हैं।

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾

(५९) (आप) कहिए कि ये तो बताओ कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो जीविका भेजी थी, फिर तुमने उसका कुछ भाग हराम तथा कुछ हलाल कर लिया। [4] (आप) पूछिए कि क्या

قُلْ أَرَأَيْتُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ لَكُم مِّن رِّزْقٍ فَجَعَلْتُم مِّنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ آللَّهُ أَذِنَ

---

[1]अर्थात दिलों में एकेश्वरवाद (तौहीद) तथा ऋषित्व (रिसालत) एवं सत्य विश्वास के विषय में जो संदेह तथा शंका उत्पन्न होती है, उनका निवारण तथा अविश्वास एवं द्रयवाद की अपवित्रता तथा दोष को स्वच्छ करता है।

[2]यह क़ुरआन ईमानवालों के लिये मार्गदर्शन तथा कृपा का साधन है, वैसे तो यह क़ुरआन अखिल मानव जगत के लिये मार्गदर्शन तथा कृपा का साधन है, परन्तु उससे लाभान्वित केवल ईमानवाले होते हैं, इसलिये यहाँ उन्हीं के लिये केवल मार्गदर्शन तथा कृपा का साधन कहा गया है। इस विषय को क़ुरआन करीम में सूर: *बनी इस्राईल* आयत संख्या ८२ तथा सूर: *अलिफ़॰ लाम॰ मीम सजद:* आयत संख्या ४४ में भी वर्णन किया गया है (इसके अतिरिक्त هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ की व्याख्या देखिए)

[3]खुशी उस अवस्था का नाम है जो किसी प्रिय वस्तु की प्राप्ति पर मनुष्य अपने हृदय में संवेदन करता है । ईमानवालों से कहा जा रहा है कि यह क़ुरआन अल्लाह की विशेष कृपा तथा उसकी दया है, इस पर ईमानवालों को प्रसन्न होना चाहिए अर्थात उनके दिलों में हर्ष तथा आन्नद होना चाहिए। उसका अर्थ यह नहीं है कि प्रसन्नता व्यक्त करने के लिये सभा तथा जुलूसों का, दीप जलाने का तथा इसी प्रकार के अन्य निरर्थक तथा अपव्यय का काम करो। जैसाकि आजकल के धार्मिक आधुनिकीकरण वाले इस आयत से 'जश्ने ईद मीलाद' तथा इसकी कुरीति का औचित्य सिद्ध करते हैं।

[4]इससे तात्पर्य वही कुछ पशुओं का हराम करना है जो मूर्तिपूजक अपनी मूर्तियों के नाम से छोड़ दिया करते थे, जिसका विस्तृत वर्णन सूर: *अल-अनआम* में गुज़र चुका है।

لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝

तुमको अल्लाह ने आदेश दिया था अथवा अल्लाह पर झूठ गढ़ते हो ?

وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝

(६०) तथा जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं उनका क़ियामत (प्रलय) के विषय में क्या विचार है ?[1] वास्तव में लोगों पर अल्लाह तआला का बड़ा ही उपकार है ।[2] परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते ।[3]

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝

(६१) तथा आप किसी अवस्था में हों तथा इन अवस्थाओं में आप कहीं से क़ुरआन पढ़ते हों तथा तुम लोग जो कार्य भी करते हो हमको सभी की सूचना रहती है जब तुम उस कार्य में व्यस्थ रहते हो तथा आपके प्रभु से कोई वस्तु कण बराबर लुप्त नहीं, न धरती में न आकाश में तथा न कोई वस्तु उससे छोटी और न कोई बड़ी, परन्तु यह सब खुली किताब में है ।[4]

---

[1]अर्थात क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उनसे क्या व्यवहार करेगा ।

[2]कि वह मनुष्यों की दुनिया में तुरंत पकड़ नहीं करता । बल्कि उसके लिये एक दिन निर्धारित कर रखा है । अर्थ यह है कि वह दुनिया का सुख मुसलमान तथा काफ़िर सभी को अंतर किये बिना देता है । अथवा जो चीज़ें मनुष्यों के लिये लाभकारी तथा आवश्यक हैं, उन्हें उचित तथा वैध बनाया है, उन्हें हराम नहीं किया ।

[3]अर्थात् अल्लाह के प्रदान किये हुए सुखों की कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते, अथवा उसकी हलाल की हुई वस्तुओं को हराम कर लेते हैं ।

[4]इस आयत में अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा ईमानवालों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वह सारी सृष्टि के हाल से परिचित है तथा हर पल प्रत्येक क्षण मनुष्यों पर उसकी दृष्टि है । धरती एवं आकाश की कोई वस्तु उससे छिपी हुई नही है । यह वही विषय है जो सूर: *अल-अनआम* आयत संख्या ५९ में गुज़र चुका है कि "उसी के पास परोक्ष के कोष हैं, जिन्हें वही जानता है । उसे वन तथा जल की

(६२) याद रखो कि अल्लाह के मित्रों पर[1] न कोई भय है न वे दुखी होते हैं ।[2]

أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ ٱللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

सब वस्तुओं का ज्ञान है, तथा कोई पत्ता नहीं झड़ता परन्तु वह उसको जानता है, तथा धरती के अधरों में कोई दाना तथा कोई हरी एवं सूखी वस्तु नहीं है, परन्तु 'किताबे मोबीन' में (लिखी हुई) है ।" उसी प्रकार सूर: अल-अनआम की आयत संख्या ३८ तथा सूर: हूद की आयत संख्या ६ में भी इस विषय का वर्णन किया गया है। जब वास्तविकता यह है कि वह आकाश तथा धरती में उपस्थित वस्तुओं की गति को जानता है, तो वह मनुष्य तथा जिन्नों की गति तथा कर्मों से क्योंकर अनजान रह सकता है, जो अल्लाह की इबादत करने के लिये बनाये तथा भेजे गये हैं ?

[1]अवज्ञाकारियों के पश्चात अल्लाह तआला अपने आज्ञाकारियों की चर्चा कर रहा है तथा वह हैं औलिया अल्लाह, (अल्लाह के मित्र) । 'औलिया' बहुवचन है 'वली' शब्द का जिसका शाब्दिक अर्थ 'निकटवर्ती' है । इस आधार पर "औलिया अल्लाह" का अर्थ होगा वे सच्चे तथा नि:स्वार्थी ईमानवाले जिन्होंने अल्लाह की आज्ञापालन कर तथा निषेधित कार्यों से बचकर अल्लाह की निकटता प्राप्त कर ली । इसीलिये अल्लाह तआला ने स्वयं अगली आयत में उनकी प्रशंसा इन शब्दों में की है, "जो ईमान लाये तथा जिन्होंने अल्लाह का भय दिल में रखा ।" तथा ईमान एवं अल्लाह का भय ही अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का आधार तथा प्रमुख साधन है । इस आधार पर हर अल्लाह का भय रखने वाला ईमानदार अल्लाह का वली है । लोग वली होने के लिये चमत्कार दिखाना आवश्यक समझते हैं तथा फिर वे अपने बनाये हुए वलियों के झूठे-सच्चे चमत्कारों का प्रचार करते हैं, यह विचार पूर्णत: दोषपूर्ण है । चमत्कार तथा वली का न चोली-दामन का साथ है न इसके लिये आवश्यक प्रतिबन्ध । यह अलग बात है कि किसी से चमत्कार प्रदर्शित हो जाये तो अल्लाह की इच्छा है, इसमें उस महात्मा की इच्छा सम्मिलित नहीं है । परन्तु किसी अल्लाह से भय करने वाले मोमिन तथा सुन्नत के पालन करने वाले से चमत्कार का प्रदर्शन हो अथवा न हो उसके वली होने में कोई सन्देह नहीं ।

[2]भय का सम्बन्ध भविष्य से है तथा दुख का भूतकाल से । अर्थ यह है कि यदि जीवन अल्लाह के भय में व्यतीत किया होता है । इसलिये क़ियामत की भयानकता का भय इतना उन्हें नहीं होगा जिस प्रकार दूसरों को होगा । बल्कि वे अपने ईमान तथा अल्लाह के भय के कारण अल्लाह की दया तथा विशेष कृपा के अभिलाषी तथा उसके साथ अच्छे विचार रखने वाले होंगे । इसी प्रकार दुनिया में वे जो कुछ छोड़ गये होंगे अथवा दुनिया के स्वाद उन्हें नहीं प्राप्त हुए होंगे उन पर उन्हें कोई दुख नहीं होगा । एक अन्य अर्थ यह भी है कि दुनिया में जो इच्छित वस्तु उन्हें नहीं मिली, उस पर वे

(६३) ये वे लोग हैं जो ईमान लाये तथा (पाप से) संयम बरतते हैं ।

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

(६४) उनके लिए साँसारिक जीवन में भी[1] तथा परलोक में भी शुभ सूचना है, अल्लाह तआला की बातों में कुछ परिवर्तन नहीं हुआ करता । यह बड़ी सफलता है ।

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾

(६५) तथा आपको उनकी बातें दुख में न डालें, सार्वभौमिक प्रभुत्व अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है ।

وَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾

(६६) याद रखो कि जितना कुछ आकाशों में हैं तथा जितने धरती में हैं यह सब अल्लाह के ही हैं तथा जो लोग अल्लाह को छोड़कर अन्य साझीदारों को पुकारते हैं किस वस्तु का पालन कर रहे है । मात्र कल्पित विचारों का पालन कर रहे हैं तथा मात्र अनुमानित बातें कर रहे हैं ।[2]

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾

दुख का प्रदर्शन नहीं करते, क्योंकि वह जानते हैं कि यह सब कुछ अल्लाह के निर्णय एवं भाग्य की देन है । जिससे उनके दिलों में दुख तथा मैल उत्पन्न नहीं होता, अपितु उनके दिल अल्लाह के निर्णय पर प्रसन्न तथा शान्त रहते हैं ।

[1]दुनिया में शुभसूचना से तात्पर्य पुण्य के कार्य हैं अथवा वह शुभसूचना कि जो मृत्यु के समय फ़रिश्ते एक ईमानवाले को देते हैं, जैसाकि क़ुरआन तथा हदीस से सिद्ध है ।

[2]अर्थात अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराना किसी तर्क के आधार पर नहीं । बल्कि एक वैचारिक मन्थन, तथा कल्पना एवं अनुमान की देन है । आज यदि मनुष्य अपनी बुद्धि तथा समझ को उचित रूप से प्रयोग करे तो नि:सन्देह उसपर यह स्पष्ट हो सकता है कि अल्लाह का कोई साझीदार नहीं । तथा जिस प्रकार वह आकाश तथा धरती को पैदा करने में अकेला है कोई उसका साझीदार नहीं, तो फिर इबादत में अन्य उसका साझीदार किस प्रकार हो सकते हैं ?

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾

(६७) वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात बनायी ताकि तुम उसमें विश्राम करो तथा दिन भी इस रूप से बनाया कि देखने भालने का साधन है, वस्तुतः इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ الْغَنِيُّ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنْ عِندَكُم مِّن سُلْطَانٍ بِهَٰذَا ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

(६८) वे कहते हैं कि अल्लाह संतान रखता है। वह इससे पवित्र है! वह तो किसी का आश्रित नहीं।[1] उसी का स्वामित्व है, जो कुछ आकाशों में है तथा जो कुछ धरती में है।[2] तुम्हारे पास इस पर कोई प्रमाण नहीं। क्या अल्लाह पर ऐसी बात लगाते हो जिसका तुम ज्ञान नहीं रखते।

---

[1]तथा जो सबसे निस्पृह हो, उसे सन्तान की भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि संतान तो सहारे के लिये होती है तथा जब उसे सहारे की आवश्यकता नहीं तो उसे सन्तान की क्या आवश्यकता ?

[2]जब आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु उसी की है तो प्रत्येक उसके प्राधीन एवं दास हुए। फिर उसे सन्तान की क्या आवश्यकता ? सन्तान की आवश्यकता उसे होती है, जिसे कुछ सहायता तथा सहारे की आवश्यकता हो। तथा जिसका आदेश आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु पर चलता हो, उसे क्या आवश्यकता उत्पन्न हो सकती है ? इसके अतिरिक्त सन्तान की आवश्यकता की रुचि उसे होती है जो अपने पश्चात अपने स्वामित्व का उत्तराधिकारी बनाना चाहता हो। तथा अल्लाह तआला तो अनन्त है इसलिये अल्लाह के लिये सन्तान ठहराना इतना बड़ा अपराध है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :

﴿ تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۝ أَن دَعَوْا لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدًا ﴾

"इस बात से कि वे कहते हैं कृपालु की संतान है, निकट है कि आकाश फट जाये, धरती चिर जाये तथा पर्वत कण-कण हो जाये।"(सूरः *मरियम*-९०,९१)

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ

(६९) (आप) कह दीजिए कि जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोपण करते हैं[1] वे सफल न होंगे।[2]

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ

(७०) (यह) संसार में थोड़ा सा सुख है फिर हमारे पास उनको आना है फिर हम उनको उनके कुफ़्र (अविश्वास) के बदले कठोर दण्ड चखायेंगे।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ

(७१) तथा आप उनको नूह की कथा पढ़कर सुनाइए जबकि उन्होंने अपने समुदाय से कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो यदि तुमको मेरा रहना तथा अल्लाह के आदेशों की शिक्षा देना भारी लगता है तो मेरा तो अल्लाह ही पर भरोसा है। तुम अपनी योजना अपने साथियों

---

[1] افـــتـراء (इफ़्तरा) का अर्थ है झूठी बातें कहना। फिर उसको झूठ कहना बल देने के लिये है।

[2] इससे स्पष्ट है कि सफलता से तात्पर्य परलोक की सफलता अर्थात अल्लाह के क्रोध तथा उसकी यातना से बचना है। मात्र दुनिया का अस्थाई सुख सफलता नहीं। जैसाकि बहुत से लोग अधर्मियों के अस्थाई सुख-सुविधा से त्रुटि तथा शंका एवं संदेह में पड़ जाते हैं। इसलिये अगली आयत में फ़रमाया : "ये दुनिया में थोड़ा सा सुख भोग लें फिर अन्त में हमारे ही पास आना है।" अर्थात यह दुनिया का सुख परलोक के सुखों की अपेक्षा अत्यन्त तुच्छ है। इसके पश्चात उन्हें अत्यन्त कठोर यातना भोगना पड़ेगा। इसलिए इस बात को अच्छे प्रकार से समझ लेना चाहिये कि काफ़िरों, मूर्तिपूजकों तथा अल्लाह के अवज्ञाकारियों का साँसारिक सुख तथा वैभव इस बात का प्रमाण नहीं है कि ये समुदाय सफल हैं तथा अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न है, यह भौतिक सफलतायें उनके निरन्तर प्रयत्नों का परिणाम हैं, जो प्रत्यक्ष कारणों के अनुसार प्रत्येक उस समुदाय को प्राप्त हो सकता है जो साधनों को व्यवहार में लाते हुए उसी प्रकार परिश्रम करेगा, चाहे वह ईमानवाला हो अथवा काफ़िर। इसके अतिरिक्त यह अस्थाई सफलतायें अल्लाह के निर्धारित नियम तथा अवसर प्रदान करने का परिणाम भी हो सकता है। जिसका स्पष्टीकरण हम इससे पूर्व कई स्थानों पर कर चुके हैं।

के साथ सुदृढ़ कर लो ।[1] फिर तुम्हारी योजना तुम्हारे लिए घूटन का कारण न होनी चाहिए ।[2] फिर मेरे साथ घटित कर दो तथा मुझे अवसर न दो ।

عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾

(७२) फिर भी यदि तुम मुख मोड़ते जाओ तो मैंने तुमसे कोई बदला तो नहीं माँगा,[3] मेरा बदला तो केवल अल्लाह ही देगा तथा मुझे आदेश दिया गया है कि मैं मुसलमानों में से रहूँ ।[4]

فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾

(७३) तो वे लोग उनको झुठलाते रहे,[5] फिर हमने उनको तथा जो उनके साथ नाव में सवार थे उनको मुक्ति प्रदान किया तथा उनको

فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا

---

[1]अर्थात जिनको तुमने अल्लाह का साझीदार बना रखा है, उनकी सहायता भी प्राप्त कर लो । (यदि वे तुम्हारे विचार के अनुसार तुम्हारी सहायता कर सकते हैं)

[2] غُمَّةً का अन्य अर्थ है अस्पष्ट तथा छिपा हुआ होना । अर्थात मेरे विरूद्ध तुम्हारा प्रयत्न स्पष्ट तथा साफ़ होना चाहिए ।

[3]कि जिसके कारण तुम यह आरोप लगा सको कि नबूअत के दावे से उसका उद्देश्य धन-दौलत एकत्रित करना है ।

[4]आदरणीय नूह के इस कथन से भी ज्ञात हुआ कि सभी नबियों का धर्म इस्लाम ही रहा है यद्यपि धार्मिक नियम भिन्न-भिन्न तथा विधियाँ उनकी अलग रहीं । जैसाकि आयत सूर: *अल-मायद:*, ४८ से स्पष्ट है । [المائدة:٤٨] ﴿لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا﴾ ' परन्तु धर्म सभी का इस्लाम था, देखिये *सूर: अल-बकर:*- १३१ तथा १३२, सूर: यूसुफ़-१०१, सूर: *अन्नम्ल*-९१, *सूर: यूनुस*-८४, *सूर: अल-आराफ़*-१२६, *सूर: नम्ल*-४४, *सूर: अल-मायद:*-४४,१११ एवं *सूर: अल-अनआम*-१६२ तथा १६३ ।

[5]अर्थात नूह के समुदाय वालों ने सभी प्रकार के शिक्षा एवं उपदेश के उपरान्त भी झुठलाने का मार्ग नहीं छोड़ा, अत: अल्लाह तआला ने आदरणीय नूह तथा उन पर ईमान लाने वालों को एक नाव में सवार कराके बचा लिया तथा शेष सभी को, यहाँ तक की आदरणीय नूह के एक पुत्र को भी डुबा दिया ।

ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَـٰتِنَا ۚ فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَـٰقِبَةُ ٱلْمُنذَرِينَ ﴿٧٣﴾

उत्तराधिकारी बनाया[1] तथा जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको डुबो दिया। तो देखना चाहिए क्या परिणाम हुआ उन लोगों का जो डराये जा चुके थे।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَآءُوهُم بِٱلْبَيِّنَـٰتِ فَمَا كَانُوا۟ لِيُؤْمِنُوا۟ بِمَا كَذَّبُوا۟ بِهِۦ مِن قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ ٱلْمُعْتَدِينَ ﴿٧٤﴾

(७४) फिर उनके (नूह) के पश्चात हमने अन्य रसूलों को उनके समुदाय की ओर भेजा, तो वे उनके पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आये।[2] पर जिस चीज़ को उन्होंने प्रथम समय में झूठा कह दिया, यह न हुआ कि फिर उस पर ईमान ले आते।[3] हम इसी प्रकार सीमा उल्लघंन करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।[4]

---

[1]अर्थात धरती में उन बचने वालों को पूर्व के लोगों का उत्तराधिकारी बनाया। फिर मनुष्यों का आगामी वंश उन्हीं लोगों विशेष रूप से आदरणीय नूह के तीन पुत्रों से चला, इसीलिये आदरणीय नूह को दूसरा आदम (द्वितीय मनु) कहा जाता है।

[2]अर्थात ऐसे लक्षण तथा चमत्कार ले कर आये जो इस बात को प्रमाणित करते थे कि वास्तव में यह अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, जन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन तथा निर्देश देने के लिये भेजा है।

[3]परन्तु इन समुदायों ने रसूलों की बात नहीं मानीं, मात्र इसलिये कि जब पहले-पहल ये रसूल उनके पास आये तो तुरन्त बिना किसी विचार-विमर्श के उनको नकार दिया, यह पहली बार का इंकार उनके लिये स्थाई पर्दा बन गया। तथा वे यही सोचते रह गये कि हम तो पहले नकार चुके हैं, अब इसको स्वीकार करना क्यों ? परिणाम स्वरूप ईमान से वंचित रहे।

[4]अर्थात जिस प्रकार इन पूर्व के समुदायों पर उनके अविश्वास तथा झुठलाने के कारण मुहरें लगती रही हैं, उसी प्रकार भविष्य में भी जो समुदाय रसूलों को झुठलायेगा तथा अल्लाह की निशानियों को झुठलाने का मार्ग अपनायेगा, उनके दिलों पर भी सील लगती रहेगी तथा वे संमार्ग से उसी प्रकार वंचित रहेंगे जिस प्रकार पूर्व के समुदाय वंचित रहे।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُّوسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَاۡئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

(७५) फिर हमने उन (पैग़म्बरों) के पश्चात मूसा तथा हारून को फ़िरऔन[1] तथा उसके प्रमुखों के पास अपने चमत्कार देकर भेजा ।[2] तो उन्होंने अभिमान किया तथा वे लोग अपराधी समुदाय थे ।[3]

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾

(७६) फिर जब उनको हमारे पास से सत्य (प्रमाण) पहुँचा तो वे लोग कहने लगे कि निःसन्देह यह खुला जादू है ।[4]

قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾

(७७) मूसा ने कहा कि क्या तुम इस सत्य के सम्बन्ध में जबकि वह तुम्हारे पास आ पहुँचा है, ऐसी बात कहते हो, क्या यह जादू है, जब कि जादूगर सफल नहीं होते ?[5]

---

[1]रसूलों का सामान्य वर्णन करने के पश्चात आदरणीय मूसा तथा हारून का वर्णन किया जा रहा है, यद्यपि रसूलों के मध्य वह भी आ जाते हैं, परन्तु उनकी गणना गणमान्य रसूलों में होती है, इसलिये विशेषरूप से उनका अलग वर्णन किया ।

[2]आदरणीय मूसा के ये चमत्कार विशेष रूप से नौ दिव्य निशानियाँ, जिनका वर्णन अल्लाह ने *सूरः बनी इस्राईल* आयत १०१ में किया है, प्रसिद्ध हैं ।

[3]अर्थात वे चूँकि बड़े-बड़े अपराध तथा पापों में लीन थे, इसलिये उन्होंने अल्लाह के भेजे हुए रसूलों को भी झुठलाया। क्योंकि एक पाप दूसरे पाप का साध्य बनता है । तथा पापों का निरंतर करते जाना बड़े-बड़े पापों को करने का दुस्साहस उत्पन्न कर देता है ।

[4]जब अस्वीकार करने के लिये उचित तर्क अथवा प्रमाण नहीं मिलता, तो उससे छुटकारा प्राप्त करने के लिये कह देते हैं कि यह जादू है ।

[5]आदरणीय मूसा ने कहा कि तनिक विचार तो करो। सत्य के आमन्त्रण तथा उचित बात को तुम लोग जादू कहते हो, भला यह जादू है ? जादूगर तो सफल ही नहीं होते । अर्थात इच्छित उद्देश्य प्राप्त करने तथा अप्रिय परिणाम से बचने में वे असफल ही रहते हैं । तथा मैं तो अल्लाह का रसूल हूँ, मुझे अल्लाह की सहायता प्राप्त है तथा उसकी ओर से मुझे चमत्कार तथा दिव्य निशानियाँ प्रदान की गयी हैं, मुझे जादू तथा जादूगरी

قَالُوٓا أَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ ءَابَآءَنَا وَتَكُونَ لَكُمَا ٱلْكِبْرِيَآءُ فِى ٱلْأَرْضِ ۖ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِينَ ﴿٧٨﴾

(७८) वह लोग कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हमको उस मार्ग से हटा दो जिस पर हमने अपने पूर्वजों को पाया है, तथा तुम दोनों को दुनिया में बड़ापन मिल जाये,[1] तथा हम तुम दोनों को कभी नहीं मानेंगे।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ٱئْتُونِى بِكُلِّ سَٰحِرٍ عَلِيمٍ ﴿٧٩﴾

(७९) तथा फ़िरऔन ने कहा कि मेरे पास सभी दक्ष जादूगरों को लाओ।

فَلَمَّا جَآءَ ٱلسَّحَرَةُ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰٓ أَلْقُوا۟ مَآ أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٨٠﴾

(८०) फिर जब जादूगर आये तो मूसा ने उनसे कहा कि डालो जो कुछ तुम डालने वाले है।

فَلَمَّآ أَلْقَوْا۟ قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُم بِهِ ٱلسِّحْرُ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ سَيُبْطِلُهُۥٓ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿٨١﴾

(८१) तो जब उन्होंने डाला तो मूसा ने कहा कि यह जो कुछ तुम लाये हो जादू है। निश्चित बात है कि अल्लाह इसको अभी नष्ट किये देता है,[2] अल्लाह ऐसे भ्रष्टाचारियों का कार्य

की क्या आवश्यकता है ? तथा अल्लाह के प्रदान किये हुए चमत्कार के समक्ष इसका क्या स्थान है ?

[1]यह न मानने वालों के अन्य कुतर्क हैं, जो तर्क से विवश हो कर प्रस्तुत करते हैं। एक यह कि तुम हमें हमारे पूर्वजों के मार्ग से हटाना चाहते हो, दूसरे यह कि हमें मान-मर्यादा तथा राज्य प्राप्त है, उसे छीनकर स्वयं अधिकार करना चाहते हो। इसलिये हम तो कभी भी तुम पर ईमान नहीं लायेंगे। अर्थात पूर्वजों का अनुकरण तथा सांसारिक राज्य एवं मान-मर्यादा ने उन्हें ईमान लाने से रोके रखा। उसके पश्चात आगे वही कथा है कि फ़िरऔन ने दक्ष जादूगरों को बुलाया तथा आदरणीय मूसा एवं जादूगरों का मुकाबला हुआ, जिस प्रकार सूरः *आराफ़* में गुज़रा तथा सूरः *ताहा* में भी इसका कुछ विवरण आयेगा।

[2]अतः ऐसा ही हुआ। भला झूठ भी सत्य के सामने सफल हो सकता है ? जादूगरों ने, चाहे वह अपने कला में कितने ही दक्ष थे, जो कुछ प्रस्तुत किया वह जादू ही था तथा नज़रबन्दी की कला ही थी तथा जब आदरणीय मूसा ने अल्लाह के आदेश पर छड़ी फेंकी तो उसने सारे जादूगरों की जादूगरी को एक क्षण में समाप्त कर दिया।

बनने नहीं देता ।[1]

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝٨٢

(८२) तथा अल्लाह तआला सत्य प्रमाण को अपने कथनानुसार स्पष्ट[2] कर देता है, चाहे अपराधी को कितना ही बुरा लगे ।

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ

(८३) फिर मूसा पर उनके समुदाय वालों में से केवल कुछ ही ईमान लाये,[3] वह भी फ़िरऔन तथा अपने अधिकारियों से डरते-डरते कि कहीं उनको दुख न पहुँचाये, [4] तथा वास्तव

---

[1]तथा यह जादूगर भी भ्रष्टाचारी थे । जिन्होंने मात्र धन कमाने के लिये यह कला सीख रखी थी तथा जादू की कला दिखाकर लोगों को मूर्ख बनाते थे, अल्लाह तआला उनके इस भ्रष्टाचारों को किस प्रकार सुसज्जित बना सकता था ?

[2]अथवा कथन से तात्पर्य वह तर्क तथा युक्तियाँ हैं, जो अल्लाह तआला अपनी किताबों में उतारता रहा है, जो पैग़म्बरों को उसने प्रदान किया था । अथवा वे चमत्कार हैं, जो अल्लाह तआला के आदेश से नबियों के हाथों प्रदर्शित हुए अथवा अल्लाह का वह आदेश है जो शब्द كُنْ (कुन) द्वारा करता है ।

[3] قومه के अक्षर ـه के सम्बन्ध में व्याख्याकारों में मतभेद है । कुछ ने इसे आदरणीय मूसा की ओर संकेत किया है क्योंकि आयत में सर्वनाम से पूर्व उन्हीं का नाम (वर्णन) आया है । अर्थात मूसा के समुदाय से थोड़े से लोग ईमान लाये । परन्तु इमाम इब्ने कसीर आदि ने इसका संकेत फ़िरऔन की ओर किया है अर्थात फ़िरऔन के समुदाय में से थोड़े से लोग ईमान लाये । उनका तर्क यह है कि इस्राईल की सन्तान के लोग तो एक रसूल तथा छुटकारा दिलाने वाले की प्रतीक्षा में थे जो आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम के रूप में उन्हें मिल गये तथा इस आधार पर इस्राईल का वंश (सिवाय कारून के) उन पर ईमान रखते थे । इसलिये उचित बात यही है कि ﴿ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ﴾ से तात्पर्य फ़िरऔन के समुदाय से थोड़े से लोग हैं, जो आदरणीय मूसा पर ईमान लाये । उन्हीं में से उनकी पत्नी (आदरणीया) आसिया भी हैं ।

[4]कुरआन करीम की यह व्याख्या भी इस बात की द्योतक है कि ईमान लाने वाले थोड़े से लोग फ़िरऔन के समुदाय में से थे, क्योंकि उन्हीं को फ़िरऔन तथा उसके दरबारियों तथा अधिकारियों से कष्ट पहुँचाये जाने का भय था, इस्राईल की संतान वैसे फ़िरऔन की दासता तथा अधीनता का अपमान एक लम्बे समय से सहन कर रहे थे ।

में फ़िरऔन उस देश में उच्च (शक्तिवाला) था, तथा यह भी बात थी कि वह सीमा से बाहर हो जाता था ।[1]

لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٨٣﴾

(८४) तथा मूसा ने कहा, हे मेरे समुदाय के लोगो ! यदि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, यदि तुम मुसलमान (आज्ञापालक) हो ।[2]

وَقَالَ مُوسَىٰ يَا قَوْمِ إِنْ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ ﴿٨٤﴾

(८५) तो उन्होंने कहा कि हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया । हे हमारे प्रभु ! हमको इन अत्याचारी समुदाय का भोगी न बना ।

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾

(८६) तथा हमको अपनी कृपा से इन काफ़िर लोगों से मुक्ति प्रदान कर ।[3]

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾

परन्तु मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था, न उन्हें इसके कारण से अधिक कष्ट का भय था ।

[1]तथा ईमानवाले उस के उसी अत्याचार तथा क्रूरता के व्यवहार से भयभीत थे ।

[2]इस्राईल की संतान फ़िरऔन की ओर से जिस अनादर एवं अपमान का शिकार थी आदरणीय मूसा के आने के पश्चात भी उसमें कमी नहीं आयी, इसलिये वे अधिक परेशान थे, अपितु आदरणीय मूसा से उन्होंने यहाँ तक कह दिया, ऐ मूसा ! जिस प्रकार तेरे आने से पूर्व हम फ़िरऔन तथा उसके समुदाय की ओर से ढाये जा रहे दुखों में पड़े थे, तेरे आने के पश्चात भी हमारा यही हाल है जिस पर आदरणीय मूसा ने उन्हें उत्तर दिया कि आशा है कि मेरा प्रभु शीघ्र ही तुम्हारे शत्रु को नष्ट कर देगा । परन्तु उसके लिये आवश्यक है कि तुम केवल एक अल्लाह से सहायता चाहो तथा धैर्य का दामन न छोड़ो । (देखिये *सूर: अल-आराफ़,* आयत १२८ तथा १२९) यहाँ भी आदरणीय मूसा ने उन्हें बलपूर्वक कहा कि यदि तुम अल्लाह के सच्चे आज्ञाकारी हो, तो उसी पर भरोसा करो ।

[3]अल्लाह पर भरोसा करने के साथ-साथ उन्होंने अल्लाह के दरबार में प्रार्थनायें भी कीं । तथा अवश्य ईमानवालों के लिये यह एक बहुत बड़ा हथियार भी है तथा सहारा भी ।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

(८७) तथा हमनें मूसा तथा उनके भाई की ओर वह्यी (प्रकाशना) भेजी कि तुम दोनों अपने इन लोगों के लिए मिस्र में घर स्थापित रखो तथा तुम सब उन्हीं घरों को नमाज़ पढ़ने का स्थान निर्धारित कर लो।[1] तथा निरन्तर नमाज़ पढ़ो तथा आप ईमानवालों को शुभ सूचना दे दें।

وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝

(८८) तथा मूसा ने विनती की हे मेरे प्रभु! तूने फ़िरऔन तथा उसके पदाधिकारियों को शोभा तथा प्रत्येक प्रकार के धन सांसारिक जीवन में प्रदान किये। हे हमारे प्रभु! (इसलिए प्रदान किये हैं) कि वे तेरे मार्ग से भटकावें। हे हमारे प्रभु! उनके धनों को ध्वस्त कर दे तथा उनके दिलों को कठोर कर दे,[2] ताकि यह ईमान न लाने पायें यहाँ तक कि दुखदायी यातनाओं को देख लें।[3]

---

[1]इसका अर्थ यह है कि अपने घरों को ही मस्जिदें बना लो तथा उनके मुख अपने क़िबले (बैतुल मुक़द्दस) की ओर कर लो ताकि तुम्हें इबादत करने के लिये चर्च आदि में जाने की आवश्यकता ही न रहे, जहाँ तुम्हें फ़िरऔन के कर्मचारियों के अत्याचार एवं क्रूरता का भय रहता है।

[2]जब मूसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि फ़िरऔन तथा उसके समुदाय पर शिक्षा एवं उपदेश का भी कोई प्रभाव नहीं हुआ तथा इस प्रकार के चमत्कार देखकर भी उनके अंदर कोई परिवर्तन नहीं आया, तो फिर उनको शाप दिया, जिसे अल्लाह तआला ने वर्णित किया है।

[3]अर्थात यदि वे ईमान लायें भी तो प्रकोप देखकर ही ईमान लायें जो उनके लिये लाभकारी न होगा। यहाँ मस्तिष्क में यह शंका नहीं उत्पन्न होनी चाहिये कि पैग़म्बर तो मार्गदर्शन के लिये प्रार्थना करते हैं न कि नष्ट हो जाने का श्राप। इसलिये कि आमंत्रण तथा चेतावनी तथा हर प्रकार के साधन के प्रयोग कर लेने के पश्चात यह

(८९) (अल्लाह तआला ने) कहा कि तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकार कर ली गयी तुम सीधे मार्ग पर रहो ।[1] तथा उन लोगों के मार्ग पर न चलना जो अज्ञानी है ।[2]

قَالَ قَدْ أُجِيبَت دَّعْوَتُكُمَا فَٱسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعَآنِّ سَبِيلَ ٱلَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

(९०) तथा हमने ईस्राइल की सन्तान को समुद्र से पार कर दिया ।[3] फिर उनके पीछे-पीछे फ़िरऔन अपनी सेना के साथ अत्याचार तथा क्रूरता के उद्देश्य से चला, यहाँ तक कि

وَجَٰوَزْنَا بِبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱلْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُۥ بَغْيًا وَعَدْوًا ۖ حَتَّىٰٓ إِذَآ أَدْرَكَهُ ٱلْغَرَقُ

स्पष्ट हो जाये कि अब ईमान लाने की कोई आशा शेष नहीं रही है, तो फिर अन्तिम उपाय यही रह जाता है कि इस समुदाय का मामला अल्लाह को अर्पित कर दिया जाये । यह जैसे अल्लाह की इच्छा ही होती है जो पैग़म्बर के मुख से अकस्मात् निकल जाती है । जिस प्रकार आदरणीय नूह ने भी साढ़े नौ सौ वर्ष चेतावनी देने के पश्चात अन्ततः अपने समुदाय को श्राप ही दिया ।

﴿ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى ٱلْأَرْضِ مِنَ ٱلْكَٰفِرِينَ دَيَّارًا ﴾

"हे प्रभु ! धरती पर एक भी काफ़िर को बसा न रहने दे ।" (*सूरः नूह*-२६)

[1]इसका एक अर्थ तो यह है कि अपने श्राप पर स्थिर रहना, चाहे उसके प्रदर्शित होने में देर हो जाये । क्योंकि तुम्हारी प्रार्थना अवश्य स्वीकार कर ली गयी है परन्तु उसको कार्यान्वयन हम कब करेंगे यह मात्र हमारी इच्छा तथा योजनाओं पर आधारित है । अतः कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि इस श्राप के चालीस वर्ष पश्चात फ़िरऔन तथा उसका समुदाय नष्ट किया गया तथा श्राप के अनुसार जब फ़िरऔन डूबने लगा, उस समय उसने ईमान लाने की घोषणा की, जिसका उसे कोई लाभ नहीं हुआ । दूसरा अर्थ उसका यह है कि तुम अपने प्रचार तथा इस्राईल के वंश को मार्ग दर्शाने तथा सीधा मार्ग दिखाने एवं उनको फ़िरऔन की दासता से मुक्ति दिलाने का प्रयत्न जारी रखो ।

[2]अर्थात जो लोग अल्लाह के व्यवहार, उसके नियम, तथा उसके हितों व भेदों को नहीं जानते, तुम उनकी तरह न होना, अपितु अब प्रतीक्षा तथा धैर्य करो, अल्लाह तआला अपने ज्ञान तथा योजनानुसार शीघ्र अथवा देर से अवश्य अपना वायदा पूरा करेगा । क्योंकि वह वायदा के विरूद्ध नहीं करता ।

[3]अर्थात समुद्र को फाड़कर मार्ग बना दिया (जिस प्रकार *सूरः अल-बकरः* आयत ५० में गुज़रा तथा अन्य विवरण *सूरः शोअरा* में आयेगा) तथा तुम्हें एक किनारे से दूसरे किनारे पर पहुँचा दिया ।

जब डूबने लगा,[1] तो कहने लगा, मैं ईमान लाता हूँ कि जिस पर इस्राईल की सन्तान ईमान लायी हैं, कोई उसके सिवाय पूजने योग्य नहीं तथा मैं मुसलमानों में से हूँ।

قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾

(९१) (उत्तर दिया गया कि) अब ईमान लाता है ? तथा पहले अवज्ञा करता रहा तथा भ्रष्टाचारियों में सम्मिलित रहा।[2]

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٩١﴾

(९२) तो आज हम तेरे शव को छोड़ देंगे ताकि तू उन लोगों के लिए शिक्षा का चिन्ह हो जाये जो तेरे पश्चात हैं।[3] तथा वस्तुत: अधिकाँश लोग हमारे प्रमाण-चिन्हों से विमुख हैं।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٢﴾

(९३) तथा हमने इस्राईल की सन्तान को अति उत्तम रहने का ठिकाना दिया तथा हमने उन्हें स्वादिष्ट वस्तुऐं भोजन के लिए प्रदान कीं तो उन्होंने मतभेद नहीं किया यहाँ तक कि उनके

وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى

---

[1]अर्थात अल्लाह के आदेश पर चमत्कारिक रूप से बने हुए जलीय मार्ग पर, जिस पर चलकर मूसा तथा उसके समुदाय ने समुद्र पार किया था, फ़िरऔन तथा उसकी सेना भी समुद्र पार करने के विचार से चलना प्रारम्भ किया। उद्देश्य यह था कि मूसा इस्राईल की संतान को, जो मेरी दासता से स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से रातों-रात ले आया, तो उसे पुन: बन्दी बना लिया जाये। जब फ़िरऔन तथा उसकी सेना उस समुद्र मार्ग में प्रवेश कर गया, तो अल्लाह ने समुद्र को पूर्व की भाँति बहने का आदेश दे दिया। परिणाम स्वरूप फ़िरऔन सहित सब के सब समुद्र में डूब गये।

[2]अल्लाह की ओर से उत्तर दिया गया कि अब ईमान का कोई लाभ नहीं होगा क्योंकि जब ईमान लाने का समय था, उस समय तो अवहेलना, अवज्ञाकारी तथा भ्रष्टाचार में लिप्त रहे।

[3]जब फ़िरऔन डूब गया तो उसकी मृत्यु का बहुत से लोगों को विश्वास नहीं आता था। अल्लाह तआला ने समुद्र को आदेश दिया, उसने उसकी लाश किनारे पर फेंक दिया, जिसको फिर सबने देखा। प्रसिद्ध है कि आज भी यह लाश मिस्र के अजायबघर में सुरक्षित है। والله أعلم بالصواب

جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۚ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾

पास ज्ञान पहुँच गया।[1] निश्चित बात है कि आपका प्रभु उनके मध्य क़ियामत के दिन उन बातों में निर्णय कर देगा जिन बातों में वे मतभेद करते थे।

فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) फिर यदि आप उसकी ओर से शंका में हों जिसको हमने आप की ओर भेजा है, तो आप उन लोगों से पूछिए, जो आप से पूर्व की किताबों को पढ़ते हैं। नि:सन्देह आप के पास आप के प्रभु की ओर से सच्ची किताब आयी है। आप कदापि सन्देह करनें वालों में से न हों।[2]

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٥﴾

(९५) तथा न उन लोगों में से हों, जिन्होंने अल्लाह (तआला) की आयतों को झुठलाया, तो आप घाटे पाने वालों में से हो जायें।[3]

---

[1]अर्थात एक तो अल्लाह की कृतज्ञता करने के बजाय, आपस में मतभेद प्रारम्भ कर दिया, फिर यह मतभेद भी अज्ञानता तथा मूर्खता के कारण नहीं किया, अपितु ज्ञान आ जाने के पश्चात किया। जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यह मतभेद मात्र बैर तथा घमंड के आधार पर था।

[2]यह सम्बोधन या तो जन सामान्य के लिये है अथवा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माध्यम से मुसलमानों को शिक्षा दी जा रही है। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह्यी (प्रकाशना) के विषय में संदेह हो ही नहीं सकता था। "जो किताब पढ़ते हैं, उनसे पूछ लें" का अर्थ है कि क़ुरआन मजीद से पूर्व की आकाशीय पुस्तकें (तौरात तथा इंजील आदि)। अर्थात जिन के पास यह किताबें उपलब्ध हैं, उनसे इस क़ुरआन के विषय में ज्ञात करें क्योंकि उनमें इसका लक्षण तथा अन्तिम पैग़म्बर (ईशदूत) के गुणों का वर्णन किया गया है।

[3]यह भी वास्तव में मुसलमानों को ही समझाया जा रहा है कि झुठलाने का मार्ग हानि तथा विनाश का मार्ग है।

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾

(९६) नि:सन्देह जिन लोगों के विषय में आप के प्रभु की बातें सिद्ध हो चुकी हैं, वे ईमान न लायेंगे।

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾

(९७) चाहे उसके पास सभी तर्क पहुँच जायें, जब तक वे दुखदायी यातना को न देख लें।[1]

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ ط

(९८) अत: कोई बस्ती ईमान नहीं लायी कि ईमान लाना उनके लिए लाभकारी होता, सिवाय यूनुस के समुदाय के।[2] जब वे ईमान ले आये,

---

[1]ये वही लोग हैं जो अधर्म तथा अल्लाह की अवज्ञा में इतने डूब चुके होते हैं कि उन पर किसी शिक्षा-दीक्षा का प्रभाव नहीं पड़ता, तथा कोई तर्क उनके लिये प्रभावी नहीं होता। इसीलिये कि अवहेलना तथा अवज्ञाकारिता के कारण सत्य को स्वीकार करने के प्राकृतिक गुण तथा विशेषता को वे समाप्त कर चुके होते हैं, उनकी आँखें यदि खुलती हैं तो उस समय जब अल्लाह का प्रकोप उनके सिर पर आ जाता है, तब वह ईमान अल्लाह के दरबार में स्वीकार नहीं होता।

﴿فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا﴾

"जब वे हमारा प्रकोप देख चुके (उस समय) उनके ईमान ने उन्हें कोई लाभ नहीं दिया।"(*सूर: अल-मोमिन*, ८५)

[2] لَوْلَا यह उत्तेजित के लिये هلا के अर्थ में है, अर्थात जिन बस्तियों को हमने विनाश किया, उनमें से कोई एक बस्ती ऐसी क्यों न हुई, जो ऐसा ईमान लाती जो उनके लिये लाभकारी होता। हाँ, केवल यूनुस का समुदाय ऐसा हुआ है कि जब वह ईमान ले आयी तो अल्लाह ने उससे प्रकोप दूर कर दिया। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि जब यूनुस अलैहिस्सलाम ने देखा कि उनकी चेतावनी तथा धार्मिक शिक्षा का प्रभाव उनके समुदाय पर नहीं हो रहा है, तो उन्होंने अपने समुदाय में घोषणा कर दी कि अमुक-अमुक दिन तुम पर प्रकोप आ जायेगा तथा स्वयं वहाँ से निकल गये। जब प्रकोप मेघ के रूप में उन पर उमड आया तो वह बच्चे, स्त्रियाँ यहाँ तक कि पशुओं को लेकर एक मैदान में एकत्रित हो गये तथा अल्लाह के दरबार में विनम्र विनती, तौबा, क्षमा-याचना प्रारम्भ कर दिया। अल्लाह तआला ने उनकी तौबा स्वीकार करके उनके ऊपर से प्रकोप टाल दिया। आदरणीय यूनुस आने-जाने वाले यात्रियों से अपने समुदाय का समाचार पूछते रहते थे, उन्हें जब पता चला कि अल्लाह तआला ने उनके समुदाय के ऊपर से प्रकोप टाल दिया है, तो उन्हें अपने झुठलाने के पश्चात अपने उस समुदाय में वापस जाना अच्छा नहीं लगा, बल्कि उनसे अप्रसन्न होकर किसी अन्य

لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾

तो हमने अपमान की यातना साँसारिक जीवन में उनसे हटा दी तथा उनको एक (निश्चित) समय तक सुख भोगने (का अवसर) दिया ।[1]

وَلَوْ شَاۤءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ۭ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

(९९) यदि आप का प्रभु चाहता तो समस्त धरती के सभी लोग ईमान ले आते,[2] तो क्या आप लोगों को बाध्य कर सकते हैं यहाँ तक कि वह मोमिन ही हो जायें ?

ओर चल दिये, जिस पर वह नाव की घटना घटित हुई (जिसका विस्तृत वर्णन अपने स्थान पर आयेगा) । (फ़तहुल क़दीर) परन्तु व्याख्याकारों का इस बात के मध्य मतभेद है कि यूनुस का समुदाय ईमान कब लाया ? प्रकोप देख कर लाया, जबकि ईमान लाना लाभकारी नहीं होता । परन्तु अल्लाह तआला ने उसे अपने इस नियम से अलग करके उस के ईमान को स्वीकार कर लिया । अथवा अभी प्रकोप नहीं आया था अर्थात वह अवस्था नहीं आयी थी कि जब ईमान लाना लाभकारी नहीं होता, परन्तु क़ुरआन करीम ने यूनुस के समुदाय को اِلَّا के शब्द के साथ जो अलग किया है वह प्रथम व्याख्या की पुष्टि करता है ।

[1]क़ुरआन ने साँसारिक प्रकोप को हटाने का वर्णन तो किया है, परलोक की यातना के विषय में कोई वर्णन नहीं किया, इसलिये कुछ व्याख्याकारों का विचार है कि उनसे परलोक की यातना समाप्त नहीं की गयी । परन्तु जब क़ुरआन ने यह स्पष्ट कर दिया कि साँसारिक प्रकोप ईमान लाने के कारण टाला गया था, तो फिर परलोक की यातना का वर्णन करने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती है । क्योंकि परलोक की यातना का निर्णय ईमान तथा ईमान न होने के आधार पर ही होना है । यदि ईमान लाने के पश्चात यूनुस का समुदाय अपने ईमान पर स्थिर रहा होगा (जिसका वर्णन यहाँ नहीं है) तो निःसंदेह वह परलोक की यातना से सुरक्षित रहेंगे । परन्तु अन्य परिस्थिति में प्रकोप से सुरक्षा केवल दुनिया की सीमा तक होगी ।

[2]परन्तु अल्लाह ने ऐसा नहीं चाहा, क्योंकि यह उसकी योजना तथा इच्छा के विपरीत है, जिसको पूर्णरूप से वही जानता है । यह इसलिये फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तीव्र इच्छा होती थी कि सब मुसलमान हो जायें, अल्लाह तआला ने फ़रमाया : यह नहीं हो सकता क्योंकि अल्लाह की इच्छा सर्वोच्च ज्ञान तथा श्रेष्ठतम रहस्य पर आधारित है, उसकी यह माँग नहीं । इसलिये आगे फ़रमाया कि आप लोगों को बलपूर्वक ईमान लाने पर कैसे बाध्य कर सकते हैं ? जबकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)के अन्दर न इसकी शक्ति है न उसके आप उत्तरदायी हैं ।

(१००) यद्यपि किसी का ईमान लाना अल्लाह की आज्ञा के बिना सम्भव नहीं। तथा अल्लाह (तआला) निर्बोध लोगों पर अशुद्धि थोप देता है।[1]

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٠﴾

(१०१) आप कह दीजिए कि तुम विचार करो कि क्या-क्या वस्तुऐं आकाशों तथा धरती में हैं तथा जो लोग ईमान नहीं लाते उनको तर्क तथा चेतावनी कोई लाभ नहीं पहुँचाते।

قُلِ انْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠١﴾

(१०२) तो क्या वे लोग केवल उन लोगों की सी घटनाओं की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो उनसे पूर्व गुजर चुके हैं, (आप) कह दीजिए कि ठीक है तो तुम प्रतीक्षा में रहो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ।[2]

فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١٠٢﴾

(१०३) फिर हम अपने पैग़म्बरों को तथा ईमानवालों को बचा लेते थे, इसी प्रकार हमारे अधिकार में है कि हम ईमान वालों को छुटकारा दिया करते हैं।

ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ اٰمَنُوا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾ ع

---

[1]अशुद्धता से तात्पर्य यातना अथवा कुफ़्र (अविश्वास) है। अर्थात जो लोग अल्लाह की निशानियों पर विचार नहीं करते, वे कुफ़्र (अधर्म) में ही लिप्त रहते हैं तथा इस प्रकार यातना के अधिकारी हो जाते हैं।

[2]अर्थात जिन लोगों पर किसी तर्क तथा चेतावनी का प्रभाव नहीं होता, इसलिये वे ईमान नहीं लाते। क्या इस बात की प्रतीक्षा में हैं कि उनके साथ भी वही इतिहास की पुनरावृत्ति की जाये, जो उनसे पूर्व के समुदायों पर गुज़र चुका है। अर्थात ईमानवालों को बचाकर (जैसाकि अगली आयत में स्पष्टीकरण है) शेष सभी को नष्ट कर दिया जाता था। यदि इस बात की प्रतीक्षा है तो ठीक है, तुम भी प्रतीक्षा करो, मैं भी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِن كُنتُمْ فِى شَكٍّ مِّن دِينِى فَلَآ أَعْبُدُ ٱلَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَلَٰكِنْ أَعْبُدُ ٱللَّهَ ٱلَّذِى يَتَوَفَّىٰكُمْ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٤﴾

(१०४) (आप) कह दीजिए[1] कि ऐ लोगो! यदि तुम मेरे धर्म की ओर से शंका में हो, तो मैं उन देवताओं की उपासना नहीं करता, जिनकी तुम अल्लाह को छोड़कर पूजा करते हो।[2] परन्तु हाँ, उस अल्लाह की इबादत करता हूँ, जो तुम्हारे प्राण निकालता है।[3] तथा मुझको आदेश हुआ है कि मैं ईमानवालों में से हूँ।

وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٥﴾

(१०५) तथा यह कि एकाग्र होकर अपना चेहरा इस धर्म की ओर[4] कर लेना तथा कभी मूर्तिपूजकों में से न बनना।

وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۖ فَإِن فَعَلْتَ

(१०६) तथा अल्लाह को छोड़कर कभी ऐसी चीज़ की इबादत न करना, जो तुझको न कोई लाभ पहुँचा सके तथा न कोई हानि पहुँचा

---

[1]इस आयत में अल्लाह तआला अपने अन्तिम पैग़म्बर परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आदेश दे रहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन सामान्य पर स्पष्ट कर दें कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग तथा मूर्तिपूजकों के मार्ग एक-दूसरे से भिन्न है।

[2]अर्थात यदि तुम मेरे धर्म के विषय में सन्देह करते हो जिसमें मात्र एक अल्लाह की इबादत है तथा यही धर्म सत्य है, न कि अन्य कोई, तो याद रखो कि मैं कभी भी इन देवताओं की किसी भी अवस्था में पूजा नहीं करूँगा, जिसकी तुम करते हो।

[3]अर्थात जीवन-मृत्यु उसी के हाथ में है, इसलिये जब वह चाहे तुम्हें मार सकता है क्योंकि मनुष्यों के प्राण उसी के हाथ में हैं।

[4]हनीफ़ का अर्थ है एकाग्रता, अर्थात प्रत्येक अन्य धर्म छोड़कर केवल इस्लाम धर्म धारण करना तथा प्रत्येक ओर से मुँह मोड़कर केवल एक अल्लाह की ओर एकाग्रता से आकर्षित होना। सबसे विच्छेद एवं अल्लाह से सम्बंध रखना।

فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّٰلِمِينَ ﴿١٠٦﴾

सके। फिर यदि ऐसा किया, तो तुम उस अवस्था में अत्याचारियों में से हो जाओगे।[1]

وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهِۦ ۚ يُصِيبُ بِهِۦ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٧﴾

(१०७) तथा यदि तुमको अल्लाह कोई दुख पहुँचाये तो सिवाय उसके कोई अन्य उसको दूर करने वाला नहीं है तथा यदि वह तुम्हें कोई सुख पहुँचाना चाहे, तो उसकी कृपा को कोई हटाने वाला नहीं,[2] वह अपनी कृपा अपने भक्तों में से जिस पर चाहे विस्तार कर दे तथा वह अति कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن ضَلَّ

(१०८) (आप) कह दीजिए ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की ओर से सत्य पहुँच चुका है।[3] इसलिए जो व्यक्ति सीधे मार्ग पर आ जाये, तो वह अपने लिए सीधे मार्ग पर

---

[1]अर्थात यदि अल्लाह को छोड़कर ऐसे देवताओं को आप पुकारेंगे जो किसी को लाभ अथवा हानि पहुँचाने का सामर्थ्य नहीं रखते, तो यह अत्याचार होगा। अत्याचार का अर्थ है وَضْعُ الشيء في غير محله किसी वस्तु को उसके मूल स्थान से हटाकर किसी अन्य स्थान पर रख देना। इबादत चूँकि केवल उस अल्लाह का अधिकार है, जिसने सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण किया है तथा जीवन के सभी साधन वही उपलब्ध कराता है, तो इस इबादत के अधिकारी शक्ति को छोड़कर किसी अन्य की पूजा-उपासना करना, जैसाकि इबादत का अत्यधिक त्रुटिपूर्ण प्रयोग है। इसलिये शिर्क को घोर अत्याचार कहा गया है। यहाँ भी यद्यपि सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है, परन्तु वास्तविक संबोधन मानव जाति तथा मुसलमानों को है।

[2]पुण्य को यहाँ कृपा से इसलिये वर्णन किया गया है कि अल्लाह तआला अपने भक्तों के साथ जो भलाई का मामला करता है, कर्मों के आधार पर यद्यपि भक्त उसके अधिकारी नहीं होते, परन्तु यह मात्र उसकी कृपा है कि वह कर्मों की अनदेखी करते हुए मनुष्यों पर कृपा तथा दया करता है।

[3]सत्य से तात्पर्य इस्लाम धर्म तथा कुरआन है, जिसमें अल्लाह के एक होने तथा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाना अनिवार्य है।

فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ﴿١٠٨﴾

आयेगा,[1] तथा जो व्यक्ति मार्ग से भटक गया, तो उसका भटकना उसी पर पड़ेगा।[2] तथा मैं तुम पर प्रभारी नहीं बनाया गया।[3]

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿١٠٩﴾

(१०९) तथा आप उसका पालन करते रहिएजो कुछ वह्यी (आदेश) आपके पास भेजी जाती है तथा धैर्य रखिए,[4] यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे तथा वह सभी निर्णायकों से श्रेष्ठ निर्णायक है।[5]

---

[1]अर्थात इस का लाभ उसी को होगा जो क़ियामत के दिन अल्लाह की यातना से बच जायेगा।

[2]अर्थात उसकी हानि तथा दण्ड उसी पर पड़ेगा जो प्रलय के दिन नरक की आग में जलेगा अर्थात यदि कोई संमार्ग अपनायेगा, तो उससे ऐसा नहीं कि अल्लाह की शक्ति बढ़ जायेगी, तथा यदि कोई इंकार तथा भटकाव का मार्ग अपनायेगा, तो उससे अल्लाह के राज्य तथा शक्ति में अंतर हो जाये। अर्थात ईमान तथा सत्य का प्रलोभन तथा अधर्म एवं गुमराही से बचने पर बल देना दोनों ही का उद्देश्य मानव जाति की भलाई तथा हित है, इस में अल्लाह का अपना कोई स्वार्थ नहीं है।

[3]अर्थात मेरा दायित्व यह नहीं कि तुम्हें मुसलमान बना दूँ अपितु मैं तो केवल भासक, शुभसूचक, तथा प्रचारक एवं निवेदक हूँ। मेरा कार्य केवल ईमानवालों को शुभसूचना देना, अवज्ञाकारियों को अल्लाह की उस पकड़ से डराना तथा अल्लाह के आदेश की ओर आमन्त्रित करके सचेत करना है। कोई इस आमन्त्रण को स्वीकार करके ईमान लाता है तो ठीक है, कोई नहीं स्वीकार करता तो मैं उसका उत्तरदायी नहीं हूँ कि बलपूर्वक करा के छोड़ूँ।

[4]अल्लाह तआला जिस चीज़ की वह्यी (प्रकाशना) करे उसे दृढ़ता से पकड़ लें, जिसका आदेश करे उसे करें तथा जिससे रोके उससे रुक जायें तथा किसी बात में आलस्य न करें। तथा वह्यी (प्रकाशना) का पालन तथा कार्यान्वयन करने में जो कठिनाईयाँ आयें, विरोधियों की ओर से जो कष्ट पहुँचाये जायें तथा सचेत करने तथा आमन्त्रित करने के मार्ग में जिन कठिनाईयों से गुज़रना पड़े उन पर धैर्य रखें तथा दृढ़ता से सब का सामना करें।

[5]क्योंकि उसका ज्ञान भी पूर्ण है, उसकी शक्ति तथा सामर्थ्य भी विस्तृत है तथा उसकी कृपा भी सामान्य है। इसलिये उससे अधिक उचित निर्णय करने वाला अन्य कौन हो सकता है?

सूरतु हूद-११

سُوْرَةُ هُوْدٍ

सूर हूद* मक्का में उतरी तथा इसकी एक सौ तेईस आयतें तथा दस रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(१) अलिफ़॰ लाम॰ रा॰ यह एक ऐसी किताब है कि इसकी आयतें सुदृढ़ की गयी हैं [1]फिर सविस्तार वर्णन की गयी हैं।[2] एक विवेकी पूर्णज्ञान वाले की ओर से।[3]

الٓرٰ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ

(२) यह कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत (उपासना) न करो, मैं तुम को

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنَّنِيْ لَكُمْ

---

*इस सूर: में भी उन समुदायों का वर्णन है जिन्होंने अल्लाह की निशानी तथा पैग़म्बरों को झुठलाया, जिसके कारण अल्लाह के प्रकोप का निशाना बने तथा इतिहास के पृष्ठों से त्रुटिपूर्ण शब्दों की भाँति मिटा दिये गये, अथवा इतिहास के पृष्ठों में शिक्षा का नमूना बनकर वर्तमान बनी हुई हैं। इसीलिए हदीस में है कि आदरणीय अबू बकर सिद्दीक (رضي الله عنه) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या बात है आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बूढ़े से दिखायी देते हैं ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उत्तर दिया कि मुझे सूर: हूद, वाक़्य:, अम्मयतसाअलून तथा इज़ा अश्शम्सु कूवेरत आदि ने बूढ़ा कर दिया है। (त्रिमिजी संख्या ३२९७, सहीह त्रिमज़ी अलबानी ३\११३)

[1]अर्थात शब्द तथा शैली में इतनी सुदृढ़ तथा पक्की है कि उनके क्रम तथा अर्थ में कोई त्रुटि नहीं।

[2]फिर इसमें आदेश तथा नियम, उपदेश तथा कथाएँ, विश्वास तथा ईमान, चरित्र एवं सम्मान जिस प्रकार स्पष्ट रूप से तथा विस्तार से वर्णन किये गया हैं, पूर्व की किताबों में उसकी तुलना प्रस्तुत करनें में असमर्थ हैं।

[3]अर्थात अपने कथन में ज्ञानी है, इसलिए उसकी ओर से उतारी हुई बातें ज्ञान से खाली नहीं हैं तथा वह सूचित भी है अर्थात सभी विषय तथा उनके परिणाम से अवगत है। इसलिए उसकी बातों पर कर्म करने से ही मनुष्य दुष्परिणाम से बच सकता है।

مِّنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ﴿٢﴾

अल्लाह की ओर से डराने वाला तथा शुभसूचना देने वाला हूँ।

وَأَنِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُم مَّتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۖ وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيرٍ ﴿٣﴾

(३) तथा यह कि तुम लोग अपने पाप अपने प्रभु से क्षमा कराओ, फिर उसी की ओर ध्यान-मग्न हो जाओ, वह तुम को निर्धारित समय तक सुख-सुविधा देगा[1] तथा प्रत्येक अधिक अच्छे कार्य करने वाले को अधिक पुण्य देगा। तथा यदि तुम लोग मुख मोड़ते रहे, तो मुझको तुम्हारे लिए एक महान दिन[2] की यातना की चिन्ता है।

إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤﴾

(४) तुमको अल्लाह ही के पास जाना है तथा वह प्रत्येक वस्तु पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है।

أَلَا إِنَّهُمْ يَثْنُونَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ ۚ أَلَا حِينَ

(५) याद रखो वह लोग अपनी छातियों को दोहरा किये देते हैं ताकि अपनी बातें (अल्लाह से) छिपा सकें।[3] याद रखो कि वह

---

[1]यहाँ उस साँसारिक संसाधनों को जिसको क़ुरआन ने सामान्य रूप से "गर्व का साधन" धोखे का सामान कहा है, यहाँ इसे "सुख सामग्री" कहा गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि जो परलोक से निश्चिन्त होकर साँसारिक सुख से लाभ प्राप्त करेगा उसके लिए यह धोखे का साधन है, क्योंकि उसके पश्चात उसे दुष्परिणाम भोगना है तथा जो परलोक की तैयारी के साथ-साथ उससे लाभ उठायेगा, उसके लिये क्षणिक जीवन सामग्री सुख सामग्री है, क्योंकि उसने उसको अल्लाह के आदेश के अनुसार प्रयोग किया है।

[2]बड़े दिन से तात्पर्य क़ियामत का दिन है।

[3]इसके उतरने की विशेषता में व्याख्याकारों का मतभेद है। अत: इसके भावार्थ में भी मतभेद है। फिर भी सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: हूद में वर्णित अवतरण की विशेषता से ज्ञात होता है कि यह उन मुसलमानों के विषय में उतरी है जो शर्म के प्रभाव से प्रभावित होने के कारण शौच तथा पत्नी के साथ सम्भोग के समय निर्वस्त्र होना प्रिय नहीं समझते थे कि अल्लाह तआला हमें देख रहा है, इसलिए ऐसे अवसरों पर वह गुप्तांगों को छिपाने के लिए अपनी छातियों को दोहरा कर लेते थे। अल्लाह तआला ने

يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑤

लोग जिस समय अपने वस्त्र लपेटते हैं वह उस समय भी सब कुछ जानता है, जो कुछ छिपाते (चुपके-चुपके बातें करते) हैं तथा जो कुछ स्पष्ट (बातें) करते हैं। निःसन्देह वह दिलों के अन्दर की बातें जानता है।

फ़रमाया कि रात्रि के अंधेरे में जब वे बिस्तरों पर अपने आपको कपड़ों से ढांक लेते थे, तो उस समय भी वह (अल्लाह) उनको देखता तथा उनकी छुपी तथा प्रकट बातों को जानता है। अर्थ यह है कि लज्जा एवं भय का भाव अपने स्थान पर अत्यन्त प्रशंसनीय है परन्तु इसमें इतनी अधिकता भी उचित नहीं इसलिए कि जिस शक्ति (अल्लाह) के भय से वे ऐसा करते हैं, उससे तो फिर भी नहीं छुप सकते, तो फिर इस प्रकार के कष्ट के क्या लाभ ?